ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | मई-I-2025 | अंक - 03 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका

101 वर्षीय दादी का महाप्रयाण

ज्ञान सागर की गहराईयों में उतर, उत्तरोत्तर प्रगति करने वाली, प्रकृति के पंचतत्वों को अपने वश कर, परमात्मा के ज्ञान रत्नों को अपने में धारण कर, समाज के हर एक वर्ग की प्रेरणास्रोत, मानव दिग्दर्शिका और आध्यात्मिक-पदचिन्ह बनाने की नायिका, परमात्म रत्नों से स्वयं को सजाने वाली जहान की नूर, परमात्मा की हूर हमारी अति स्नेही आदरणीया दादी जी को हम सभी का शत-शत नमन।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी अव्यक्त होकर वतनवासी हुई। उन्होंने अहमदाबाद के ज़ाइडस हॉस्पिटल में रात्रि 1:20 बजे अंतिम सांस ली। उनके पार्थिव शरीर को शान्तिवन में लाया गया और मुख्यालय शान्तिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में अंतिम दर्शनार्थ रखा गया था। 10 अप्रैल को सुबह 10 बजे अंतिम संस्कार दादी जी के कॉटेज के सामने बगीचे में किया गया।

चार वर्ष पूर्व बनी थीं मुख्य प्रशासिका

चार वर्ष पूर्व दादी हृदयमोहिनी के देहावसान के बाद आप मुख्य प्रशासिका बनी थीं। पिछले 40 साल से आप संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्षा रहीं। आपके नेतृत्व में वर्ष 2006 में भारतभर में निकाली गई युवा पदयात्रा को लिम्का ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया था। आप मात्र 13 वर्ष की आयु में ही ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ीं और पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। 101 वर्ष की आयु में भी दादी जी की दिनचर्या अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3:30 बजे से शुरू हो जाती थी। सबसे पहले वह परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती थीं और सुबह से ही उनका हर कर्म परमात्म श्रीमत के अनुसार चलता रहा। राजयोग मेडिटेशन उनकी दिनचर्या में शामिल रहा। उनका पूरा जीवन निर्माणचित्त रहा।

सिंध हैदराबाद में हुआ था जन्म

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने जिनका नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को रोशन करेगी। बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह में मात्र 13 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी ने विश्व शान्ति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया।

87 वर्ष की यात्रा की रहीं साक्षी

दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष तक यात्रा की साक्षी रही हैं। पिछले 40 से अधिक वर्षों से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्ष रही हैं। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पद यात्राएं, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए।

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर

दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे। छोटी-सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज़्यादा वक्त गुजारती थीं। आपका स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा सम्पन्न रहीं हैं। दादी जी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता दादी जी में शुरू से ही थी।

दादी जी के नेतृत्व में 40 साल से युवा प्रभाग

युवा प्रभाग द्वारा दादी जी के नेतृत्व में 2006 में निकाली गई स्वर्णिम भारत युवा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा ने ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में एक नया अध्याय लिख दिया। 20 अगस्त 2006 को मुंबई से यात्रा का शुभारंभ किया गया और 29 अगस्त 2006 को तिनसुकिया,असम में समापन किया गया। स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा द्वारा पूरे देश में 30 हज़ार किमी का सफर तय किया गया। इसमें पांच लाख से अधिक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। सवा सौ करोड़ लोगों को शान्ति, प्रेम, एकता, सौहार्द, विश्व बंधुत्व, अध्यात्म, व्यसनमुक्ति और राजयोग का संदेश दिया गया।

देश में बनाए कई रिकॉर्ड

दादी के ही नेतृत्व में 1985 में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इसमें 12550 किमी की दूरी तय की गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय से किया था। कन्याकुमारी से दिल्ली(5000 किमी) की सबसे लंबी यात्रा रही। भारी बारीश और तूफान के दौरान भी राजयोगी भाई-बहनों के कदम नहीं रुके और रेगिस्तान, जल, जंगल, पर्वत को लांघते हुए मिशन पूरा किया। दादी के निर्देशन में करीब 70 हज़ार किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्राएं निकाली गईं।

ब्रह्माकुमारीज़ बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति का किया नेतृत्व

वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत कन्याओं को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने दादी जी को ट्रेनिंग प्रोग्राम की मुखिया नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक बहनों की नियुक्ति और ट्रेनिंग की ज़िम्मेदारी दादी जी के हाथों में रही। दादी के नेतृत्व में अब तक 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों की नींव रखी गई है।

आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ब्रह्मा बाबा का चित्र भेंट करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी जी।

शान्तिवन के निकट मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के शिलान्यास के अवसर पर शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी।

1985 में दादी ने की 13 पैदल यात्राएं...

वर्ष 2006 में निकाली गई युवा पदयात्रा ने लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया, वही सभी यात्रियों ने 30 हज़ार किमी की पैदल यात्रा तय की। दादी ने 13 मेगा पैदल यात्राएं की हैं। अगस्त 1989 में देश के 67 स्थानों पर एक साथ अखिल भारतीय नैतिक अभियान चलाया गया। अभियान में सैकड़ों स्कूल-कॉलेजों, युवा क्लब और सामाजिक सेवा संस्थानों में प्रदर्शनियां, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें कई राज्यों के राज्यपाल व मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया।

दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाज़ा

20 फरवरी 2014 को गुलबर्गा विश्व विद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रोफेसर

- शेष पेज 3 पर...

यूथ की धड़कन, युगरतन दादी रतनमोहिनी

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

संगमयुग का समय ईश्वरीय यज्ञ के इतिहास में कई पड़ाव को पार करते हुए सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ता जा रहा है। ऐसे में 8 अप्रैल 2025 में एक और कड़ी जुड़ गई जहाँ हमारी अति स्नेही परम आदरणीया आदिरत्न दादी रतनमोहिनी ने अपनी जीवन यात्रा को सम्पन्न कर सम्पूर्णता को प्राप्त हुईं। परमात्मा ने महापरिवर्तन के कार्य के लिए भाग्यशाली आत्माओं का चयन किया जिनमें से एक दादी रतनमोहिनी भी थीं। दादी के जीवन को अगर देखें तो प्रमुख रूप से चार बातें दिखाई देती थीं। जोकि अलर्ट, एक्यूरेट, पंक्चुअल और इकॉनमी उनके जीवन से झलकती थी। दादी की रूचि पढ़ाई में बहुत थी, नया-नया सीखना और दूसरों को सिखाना, ये उनका निजी गुण था। बाबा की बनाई हुई दिनचर्या को अपनाना, जिस समय जो कार्य होता उसे उसी समय करना और उसका स्वरूप बनकर जीना उनका व्यक्तित्व रहा। बाबा के ज्ञान रत्नों की गहराई में जाकर उसके स्वरूप को अनुभव करना और उसे साथियों के साथ शेयर करना, माना कि जैसे वो उनके जीवन का हिस्सा हो। वें हमेशा मुस्कुराते हुए बहुत सहजता से परमात्म ज्ञान को दूसरों को बताना उनकी खूबी थी। उम्र में भले छोटी थीं किन्तु कहीं पर भी समाज में बड़े लोगों से मिलना और उनको परमात्म ज्ञान देने में न डरती थीं और न घबराती थीं। अपनी बात प्रखरता से तर्क सहित दूसरों के सामने रखती थीं। इसीलिए इन सब विशेताओं के कारण बाबा ने उन्हें टीचर्स को ट्रेनिंग देने का दायित्व सौंपा। बाबा का ये विश्वास उन्होंने कभी नहीं तोड़ा और जीवन पर्यन्त टीचर्स को या यूं कहें कि परमात्म संदेश को विश्वभर में देने हेतु योग्य टीचर्स की टीम तैयार की। सभी में हिम्मत, साहस भरना और सभी को सत्यता पर अडिग रहना सिखाया। आज तक हमने देखा कि अपने जैसे कईयों को तैयार कर विश्व परिवर्तन के कार्य करने के योग्य बनाया।

विशेष रूप से दादी यूथ-ऊर्जा को सही दिशा देकर संगम से सतयुग की ओर आगे बढ़ने का उनमें जज़्बा पैदा किया। वे भी खुशी-खुशी से परमात्मा के कार्य में अपना हाथ बढ़ाकर आज भी अपने भाग्य को चमका रहे हैं। दादी हमेशा अलर्ट रहतीं, वें समय को महत्व देतीं और एक-एक पल को कैसे सफल करना ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। हमें जब भी दादी जी से मिलने का अवसर मिलता तो दादी हमेशा कहतीं ये बाबा का यज्ञ है, करनकरावनहार बाबा है हमें तो सिर्फ उमंग-उत्साह में रह अपना भाग्य बनाना है। दादी इकॉनमी की अवतार थीं, मैं जब दादी जी से कुछ कार्य अर्थ पाण्डव में स्थित छोटे-से ऑफिस में मिलने गया और दादी जी को अपनी बात बताई। पहले तो दादी जी ने बड़ी स्नेहभरी दृष्टि दी और फिर पूछा कि बताइए, तो मैंने कार्य में आई कठिनाई के बारे में बताया, तो दादी ने बड़े स्नेह से मेरी ओर देखा और टेबल पर रखे एक छोटे-से कागज़ के टुकड़े में लिखा कि 'जो हो रहा है वो अच्छा है और आगे भी अच्छा ही होगा।' मैं यह पढ़कर हल्का हो गया। सचमुच जो मुझे कठिन व मुश्किल लग रहा था वो कार्य दिन बीतते ही बहुत अच्छा हो गया। दादियों के छोटे से उत्तर में भी बड़ी सफलता का छिपा राज़ अनुभव हुआ। कम बोलना, धीरे बोलना, मधुर बोलना और सत्य बोलना ये हमने दादी से सीखा। कहते हैं कि महान व्यक्ति मरने के बाद भी जीवन्त रहता है। हमारी दादी भौतिक जगत से गईं ज़रूर हैं लेकिन वें एक नये विशेष भगीरथ कर्त्तव्य प्रयाण के लिए गई हैं, न कि हमारे बीच से। वो आज भी हमारे साथ हैं, उनकी शिक्षा-दीक्षा हमारे साथ हमेशा रहेंगी और हम भी उसे आत्मसात कर परमात्मा के कार्य को सम्पन्न और सम्पूर्ण करेंगे। ऐसी मीठी दादी जी को लौकिक से अलौकिक कार्य के लिए विदाई नहीं लेकिन बधाई देते हुए हमारे हृदय की गहराइयों से श्रद्धा सुमन अर्पित।

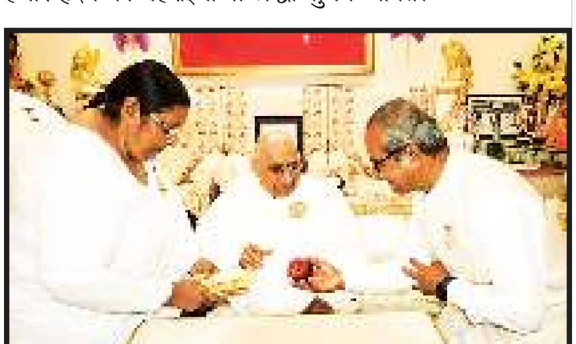

रोज़ मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करें...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हमारा बाबा हम बच्चों को अभी दु:खी देख नहीं सकता है, हम लोग तो सुखी हो गए लेकिन दूसरे भी हमारे भाई-बहन जो दु:खी, अशांत हैं, चिंता व भय में हैं, कल क्या होगा इसी सोच में रहते हैं, उन्हों को शान्ति का सहयोग दे करके उनको भी सुख-शान्ति का अनुभव कराना है। अब खुद शक्तिशाली बन मन्सा द्वारा औरों को भी शक्ति देना है, यह हमारा मूल कार्य है, इसी कार्य को करने में बिज़ी रहने से आप बहुत सहज मायाजीत बन सकते हैं क्योंकि माया पहले मन में संकल्प रूप में आती है फिर आगे बढ़ती है। तो अगर आपका मन ही सेवा में बिज़ी रहा तो माया के आने का रास्ता ही नहीं रहेगा इसलिए बाबा कहते मन्सा सेवा में रहने से एक तो हमारा मन बिज़ी रहता है। अन्तर्मुखी हो रहना माना अन्दर में रहना, बॉडी कॉन्शियस से परे रहना, जिससे माया नहीं आयेगी। दूसरा आस-पास में आपके शान्ति का वायुमण्डल का प्रभाव पड़ता है। तीसरा जो भी फाइनल होना है वो अचानक होना है तो हर घड़ी मेरे लिए अटेन्शन देने की है। अचानक होना है तो एवररेडी रहना होगा क्योंकि अन्त मति सो गति होनी है। तो अचानक, एवररेडी और बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। हर सेकण्ड अटेन्शन दे करके टेन्शन में नहीं जायें तो उनका बहुतकाल इकट्ठा हो सकता है। अगर अलबेले होंगे तो वो टाइम कट हो जाता है। इस समय हम सबको बाबा का वरदान है कोई ऐसे नहीं कहे कि हमको तो चांस है ही नहीं या हम तो अभी आये हैं...। इसमें जो ओटे सो अर्जुन, कोई भी मौका ले सकते हैं और जितना चाहो उतना पुरुषार्थ करके आगे बढ़ सकते हैं।

फिर बाबा कहते यह निश्चय रखो कल्प पहले भी मैं ही तो थी, इस कल्प में भी मैं ही हूँ और दूसरे कल्प में भी होंगी। मैं थी, मैं हूँ और मैं होंगी इतना निश्चय और नशा रखना चाहिए। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय अवश्य होती है। निश्चय की तो हमेशा विजय होती ही है, निश्चयबुद्धि विजयंति। तो हम सबको यह लक्ष्य रखना है कि मेरा बहुतकाल अभी है लेकिन अभी जो आये हैं तो पल-पल परमात्मा के प्यार में खोया हुआ हो। जहाँ प्यार होता है वो भूलना मुश्किल है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। इन बहनों की बहुत अच्छी लाइफ है, बहुत आनंदमय रहते हैं, ऐसे बहनों द्वारा बाप के प्यार की आकर्षण में ही तो यहाँ आये हैं। तो परमात्म प्यार ऐसी चीज़ है जो आप परमात्मा को पसंद आ गये तब तो इन बहनों द्वारा अपना बना लिया। बाबा को हम पसंद आये और हमको बाबा पसंद आये। पसंद आ गया, प्यार हो गया फिर तो भूलने की बात ही नहीं। और कोई भी बात आवे जो आप नहीं समझ सकते हो, क्या करूँ, कैसे करूँ की स्थिति आवे... तो सच्ची दिल से 'मेरा बाबा' कहो तो बाबा हाज़िर होके आपको ऐसी प्रेरणा देगा जो बिल्कुल ही सहज जैसे हुआ ही पड़ा है। असम्भव भी सम्भव हो जायेगा क्योंकि परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है। हमारी दिल सच्ची और साफ है तो बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं और है ही क्या? सच्ची और साफ दिल वाले को कब, क्या करना है, कैसे करना है वो टच करता है। समर्थ संकल्प है मुरली, वरदान, स्लोगन इसको कभी भी भूलो नहीं। रोज़ मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने का पुरुषार्थ ज़रूर करना। इसके लिए मन का टाइमटेबल बनाना।

जब तक अटैचमेंट है तब तक सुखी रह नहीं सकते

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली में ऐसा जादू भरा हुआ है, जो जादूगर की जादूगरी देख अजब लगता है। जादूगर क्या से क्या करते हैं, हम देखते ही रह जाते हैं। तो बाबा भी बहुत मशहूर जादूगर है। भक्ति में समझते थे कृष्ण जादूगर है, पर अनुभव कहता है शिवबाबा जादूगर है। जवानों को बूढ़ा बना देता है, बूढ़ों को जवान बना देता है, यह कमाल है बाबा की। साहूकारों को गरीब बना देता है, साहूकार सेवा में लगाने में बिचारे गरीब हैं, सोचते रहते हैं और गरीब को बाबा साहूकार बना देता है वो पूछता रहता है बाबा आपकी सेवा में मैं क्या करूँ! उसका यज्ञ सेवा के लिए प्यार बहुत, वो गरीब नहीं है। बाबा के लिए वो शाहों का शाह, तीनों लोकों का मालिक है। बाबा कहता है मैं भी तीनों लोकों का मालिक नहीं हूँ, मेरे बच्चे तीनों लोकों के मालिक हैं। चाहे यहाँ रहें, चाहे सूक्ष्म वतन में रहें। बाबा ने इतना हल्का बना दिया है। बालक सो मालिक बनके रहने में मजा है। जो इनोसेन्ट बालक होते हैं उनसे खुशबू बहुत आती है। फूल की तरह खुशबूदार, ऐसे बालक जिसमें कोई भी विकार का अंशमात्र न हो। जैसे विकार का पता ही नहीं है, वो बड़े प्यारे लगते हैं। कोई हैं जो किसी भी जाति देश, धर्म, भाषा के हों लेकिन फूल प्यारा न लगता हो? फूलों में है आम और फूलों में है गुलाब। बाबा फल भी प्रत्यक्ष फल देता है। जितना हम प्युअर बनते हैं उतना फूल मुआफिक बनते हैं, जितना खुश रहते हैं उतना फल बन जाते हैं। तो बाबा कैसा जादूगर है जो कांटे को फूल बना देता है।

बाबा कहते खुशी जैसी खुराक नहीं, चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। एक-एक बोल लाखों की वैल्यू का है। माला भी हाथ में फेरने के लिए उठानी पड़ेगी। हमें तो केवल बाबा के बोल याद करने हैं बस, खुशी आ गयी। कौन-सा बोल? बच्चे रिमेम्बर मी, जी बाबा। बच्चे 63 जन्म विकर्म किये हैं, अब मुझे याद करो तो विनाश हो जायेंगे, जी बाबा। सबमें जी बाबा करना है। जो डिटैच होना नहीं जानता है वो लविंग कैसे होगा? जब तक अटैचमेन्ट है तब तक सुखी नहीं रह सकता है। लोहे की जंजीरें टूटी, सोने की जंजीरें अच्छी लगती हैं। बाबा का कन्याओं से कितना प्यार है, कन्याओं को बाबा का नाम बाला करना है। अच्छी स्टडी करनी है, अच्छा गुणवान बनना है। जो बाबा को अच्छा लगता है, वो करना है। जहाँ बाबा बिठाता है, वहाँ बैठना है। उसमें आजकल परीक्षा और कोई नहीं है। कोई आवाज़ से बात करता है तो दूसरा ढ़ीला पड़ जाता है। अरे कुछ नहीं है, ड्रामा बड़ा मीठा है, सीख रहे हैं। किसकी नेचर को न याद करो, न याद कराओ, यह भी पाप के खाते में जायेगा। कर्म में नेचर को याद किया, हमारी भी नेचर ऐसी नाज़ुक बन गयी, तो विकर्म तो विनाश हुआ नहीं। भले समझता है मैं बुरा कर्म तो करता नहीं हूँ, पर नाज़ुक नेचर वाले में सहनशक्ति है नहीं तो श्रेष्ठ कर्म कर नहीं सकता। हमारी पढ़ाई है- पढ़ते जाओ, प्रैक्टिस करते जाओ, पास होते जाओ।

हमारा फाउंडेशन है बुद्धियोग और नींव है याद की यात्रा...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्माएं अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं। फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्माएं आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप को पैगाम देना है।

बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है- नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

एक तरफ हम नींव हैं, दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है- नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता- तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा-पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आपने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा, अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये।

अव्यक्त बापदादा से स्नेह मिलन मनाते हुए दादी रतनमोहिनी जी।

दादी जी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी। समूह चित्र में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करूणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुषमा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शारदा दीदी तथा अन्य वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहनें।

भारत के रक्षामंत्री माननीय राजनाथ सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जी। साथ हैं अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय।

बिहार के राज्यपाल माननीय आरिफ़ मोहम्मद ख़ान दादी जी से वार्तालाप करते हुए। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. लीला दीदी।

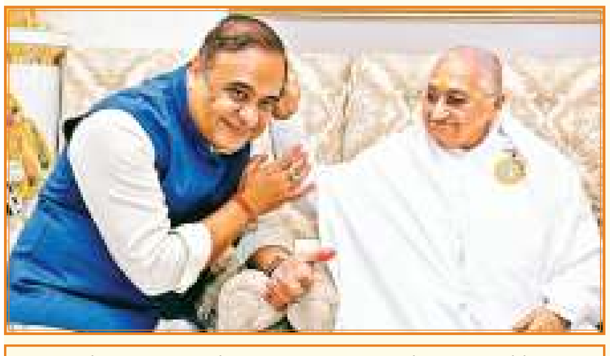

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हेमंत विश्वकर्मा दादी जी से आशीर्वाद लेते हुए।

गुलबर्गा विश्व विद्यालय की तरफ से दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजते हुए।

प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह् भेंट करते हुए दादी जी।

- पेज 1 का शेष...

ईटी पुट्टैया और रजिस्ट्रार प्रोफेसर चन्द्रकांत यतनूर के द्वारा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से नवाज़ा गया। उन्हें यह उपाधि विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक सशक्तिकरण में उनके योगदान के लिए प्रदान की गई। इसके अलावा देश-विदेश में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से समय प्रति समय दादी को सम्मानित किया गया है।

देशभर से मीटिंग में पहुंचे भाई-बहनों ने दी श्रद्धांजलि

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मुन्नी दीदी व ब्र.कु. संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, जयपुर सबज़ोन की निदेशिका ब्र.कु. सुषमा दीदी, ब्र.कु. शारदा दीदी, ब्र.कु. मनोरमा दीदी,प्रयागराज सहित देशभर से पहुंचे भाई-बहनों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दादी के निमित्त योग किया।

पतजंलि योग गुरू बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. दादी जानकी व राजयोगिनी ब्र.कु. दादी रतनमोहिनी।

राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय भजनलाल शर्मा दादी जी से मुलाकात करते हुए।

शान्तिवन में आयोजित ग्लोबल समिट कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण अडवाणी, संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु. अमीरचंद।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस दीपक शर्मा को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी जी। साथ हैं राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।

भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी से मुलाकात करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी तथा अन्य।

बिलासपुर-छ.ग.। सड़क सुरक्षा माह 2025 के समापन समारोह अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ से यातायात के नियमों की जानकारी देने एवं जागरूक करने की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए पुलिस विभाग बिलासपुर के द्वारा चौथी बार ब्र.कु. स्वाति बहन को मोमेंटो व सर्टिफिकेट भेंट करते हुए छत्तीसगढ़ राज्य के उप मुख्यमंत्री अरुण साव व धर्मजीत सिंह,तखतपुर विधायक। साथ हैं विधायक धरमलाल कौशिक,बिल्हा, विधायक सुशांत शुक्ला,बेल्तरा, विधायक दिलीप लहरिया,मस्तूरी, पुलिस महानिरीक्षक डॉ. संजीव शुक्ला, पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह, बिलासपुर नगर निगम की मेयर पूजा विधानी, यातायात पुलिस के एडिशनल एसपी रामगोपाल करियारे, एएसपी अर्चना झा तथा अन्य।

मंगलवाड़ी-वडोदरा(गुज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए अमृताबेन गणदेवीकर,ऑनर गणदेवीकर ज्वैलर्स, प्रो. डॉ.बेलाबेन खजूरिया, डॉ. भावनाबेन गढ़वी,डीन पारूल यूनिवर्सिटी, वर्षाबेन व्यास,काउंसलर एंड कॉर्पोरेटर, वैशालीबेन मोदी,नवजीवन स्कूल प्रिंसिपल, रियाबेन वैद्य, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, प्रो. ब्र.कु. सिया एवं ब्र.कु. सुनीता।

ब्यावरा-म.प्र.। शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजगढ़ जिले की संचालिका ब्र.कु. मधु, जिला पंचायत अध्यक्ष चंद्रसिह सेंधिया, वरिष्ठ एडवोकेट चंद्रकांत त्रिपाठी, दांगी समाज के जिला अध्यक्ष रामबगस दांगी, वरिष्ठ डॉ. अशोक अग्रवाल, खाद्य व्यापारी अशोक दांगी, ब्र.कु. लक्ष्मी तथा अन्य।

राजकोट-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पेपर मीडिया में अग्रसर सांज समाचार द्वारा इंटरनेशनल वुमेन डे पर आयोजित अवॉर्ड समारोह में ब्र.कु. अंजू को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अवॉर्ड प्रदान कर सम्मानित करते हुए राजकोट मेयर श्रीमती नयनाबेन एवं श्रीमती पूर्वीबेन शाह।

अब्रामा-वलसाड(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ अब्रामा, रणभूमि तथा डिवाइन योगासना मार्शल आर्ट्स एंड स्पोर्ट्स ने मिलकर 'अस्मिता' वुमेन्स योगासना स्पोर्ट्स चैंपियनशिप द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. रंजन दीदी,सूरत-वलसाड सबज़ोन इंचार्ज, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता, तनुजा आर्य,राज्य प्रभारी,महिला पतंजलि योग समिति, आर.वी. चूड़ासमा,पुलिस सबइंस्पेक्टर,वलसाड, प्रीति पांडे,साउथ ज़ोन कोऑर्डिनेटर,गुजरात राज्य योग बोर्ड, वकील केयूरभाई पटेल,प्रमुख श्री रणभूमि तथा श्री साईं चेरिटेबल ट्रस्ट कापरी, निलेश कोसिया,फाउंडर एंड टेक्निकल डायरेक्टर,डिवाइन मार्शल आर्ट एंड स्पोर्ट्स एकेडमी, बी.जी. पोपट,न्यायाधीश तथा कानून सेवा समिति के जिलाध्यक्ष तथा अन्य।

हिसार-हरियाणा। पीस पैलेस,बालसमंद रोड ब्रह्माकुमारीज़ हिसार के स्वर्ण जयंती कार्यक्रम में उपस्थित रहे भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा, विधायक श्रीमती सावित्री जिंदल, ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, पंजाब ज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. नथमल, ब्र.कु. लीना दीदी, हिसार सर्कल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. रमेश दीदी तथा अन्य।

साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कर्म और परमार्थ दोनों का बैलेंस ज़रूरी...

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि नाहाज़िर रहने पर भी केस जीत गए तो क्या कहेंगे? बाबा ने किया। यही कहते हैं ना कि बाबा ने किया। लेकिन कैसे किया बाबा ने? सर्वधर्म परित्यज्य, एक बाबा की शरण में आये तब बाबा ने काम किया। अब आगे पढ़ेंगे...

अब अठारहवें अध्याय में सर्व धर्म लेकिन कोई नहीं सोच पाता कि जब उस ज़माने में महाभारत के समय ना मुस्लिम थे, ना सिक्ख थे, ना ईसाई थे फिर भगवान ने कौन से धर्म की बात कही? ये कोई सोचता ही नहीं है। लेकिन हर इंसान के कितने धर्म हैं जिसके प्रति वो प्रतिबद्ध है। अगर वो कमिटमेंट मेरा पहला बाबा के साथ हो तो कहेंगे कि हाँ पहला धर्म मैंने बाबा के साथ निभाया। तो बाकी के धर्म को बाबा सम्भाल लेता है। इसलिए गीता में सफलता का सूत्र बताया सर्वधर्म परित्यज्य, मामेकम शरणम रज। तब सफलता सहजता से अनुभव होगी और ये स्वीट साइलेंस का जो सुकून मिलता है वो तभी मिलेगा। लेकिन इसका मतलब ये भी नहीं है कि लाइफ में इम्बैलेंस करें।

कर्म और परमार्थ दोनों का बैलेंस लेकर चलना है। व्यवहार और परमार्थ दोनों का बैलेंस लेकर चलना है। बैलेंस जीवन में बहुत ज़रूरी है। ये धर्मों को भी निभाने में बैलेंस बहुत ज़रूरी है। सर्व सम्बन्ध हमारे बाबा के साथ हों। लेकिन दुनिया के साथ जो सम्बन्ध निभाने का बैलेंस है वो भी हमें मेंटेंन करते हुए चलना है। ये नहीं कि नहीं अभी छोड़ दो इन सबको। छोड़ना भी नहीं है, इसीलिए हमेशा मिसाल दिया जाता है- एक तो कमल पुष्प, दूसरा गुलाब का पुष्प। पहला क्या बनना है? गुलाब के पुष्प और कमल के पुष्प में क्या अंतर है? लेकिन पहला क्या बनना है कमल या गुलाब? अच्छा कैसे बनेंगे गुलाब? कमल का इसलिए कहा क्योंकि कमल की गृहस्थी बहुत बड़ी होती है। लेकिन उसके बावजूद भी न्यारा है और उसकी पंखुड़ियां इतनी कोमल कि कोई कीचड़ भी ठहर नहीं सकता। तो इसी तरह शुरू में जब हम बाबा के पास आते हैं तो कमल की तरह। रहना सबके बीच में है, बैलेंस से चलना है। उनका कीचड़ हमारे पर न लगे। इतना न्यारा और प्यारा होकर रहना है।

लेकिन फिर कमल के साथ-साथ पुरूषार्थ है हमारा गुलाब बनने का। गुलाब जो है ना वो भले जैसे कहा कि खाद से वो खुशबू देता है, कांटों के बीच में रहता है लेकिन एक गुलाब जब सम्पूर्ण खिल जाता है, खिलने के बाद उसकी पंखुड़ियां झड़ जाती हैं, वो पंखुड़ियां छोड़ देता है लेकिन कमल पंखुड़ियां छोड़ता नहीं है। वो न्यारा-प्यारा ज़रूर है, अपनी पंखुड़ियों पर कीचड़ लगने ही नहीं देता है। नीचे हो जाता है। तो पहले कमल होते हैं, कमल बनते हैं और फिर कमल के बाद हमारा पुरूषार्थ है गुलाब बनने का। जो एकदम ऐसे न्यारे हो जायें धीरे-धीरे सारी रेस्पॉन्सिबिलिटी को भी हमने निभाकर उसको भी पूरा कर सम्पन्न कर दिया। किसी को नाराज़ भी नहीं किया। सम्पूर्ण खिला हुआ रहे। अपनी खुशबू भी फैलाई। लेकिन सम्पूर्ण खिल करके सारी पत्तियों को झड़ करके बीच का जो बुर रह गया माना अशरीरी हो गया। तो ये स्वीट साइलेंस है।

-क्रमशः

नीमच-म.प्र.। नीमच सबज़ोन के अन्तर्गत निर्मित किए जाने वाले 'शिव मानसरोवर' रिट्रीट सेंटर के एक लाख वर्ग फीट से अधिक के भूस्थल को जागृत किए जाने हेतु कार्यक्रम के अंतर्गत सभा को सम्बोधित करते हुए विधायक दिलीप सिंह परिहार। मंचासीन हैं सरपंच श्रीमती कंचन माली, राजयोगी ब्र.कु. सुरेन्द्र, राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, म्युनिसिपल चेयरमैन श्रीमती स्वाति चौपड़ा, प्रसिद्ध उद्योगपति डीएस चौरड़िया, सहकारिता संघ के प्रदेशाध्यक्ष मदनलाल राठौर तथा अन्य।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। रीवा संभाग आयुक्त कार्यालय में राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मान किया गया। इस सम्मान कार्यक्रम में संभाग आयुक्त आईजी, अपर कलेक्टर एसडीएम, महिला सशक्तिकरण अधिकारी आशीष दुबे, जिला परियोजना अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पांडे, डीएसपी प्रतिभा शर्मा सहित 200 से अधिक विशिष्ट और क्लासिक अधिकारी उपस्थित रहे।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जितना सोचेंगे...उतना परिस्थिति हमारे ऊपर हावी होगी...

हमारी आत्मा भी एक बैटरी की तरह है। खुशी तब महसूस होती है, जब ये बैटरी अच्छी तरह से चार्ज्ड होती है। शान्ति, सुख और प्यार भी महसूस होते हैं। जब ये बैटरी चार्ज्ड होगी, तो हम देने वाले बन जाएंगे। डिस्चार्ज्ड होगी तो लेने वाले बनेंगे। हर परिस्थिति में ध्यान में रखना है कि मन की शक्ति कम न हो।

आज आप देखो कि हर किसी को खुशी चाहिए। इतना कुछ कमा लिया, सबकुछ आ गया, परिवार इतना अच्छा है, शरीर स्वस्थ है। फिर भी हाथ उठा रहे हैं कि खुशी चाहिए। हम खुशी को निरंतर अनुभव क्यों नहीं कर पा रहे हैं? क्योंकि सारा दिन जो बातें आती हैं, जो मेरे अनुसार नहीं हैं, उनमें मेरा सोचने का तरीका आत्मा की बैटरी को कम करता है। अगर आपके पास सबकुछ हो, लेकिन आत्मा की शक्ति कम है तो आपको खुशी अनुभव नहीं हो सकती। क्योंकि खुशी बाहर की चीज़ों से नहीं आती है।

मैं कहीं जा रही थी तो हमारे सामने वाली सीट पर एक भाई बैठे थे, जो लगातार अपने फोन को स्क्रॉल कर रहे थे। तो हमने पूछा आप क्या कर रहे हैं? उन्होंने जवाब दिया कि हमारे ऑफिस में आग लग गई है और सारा सामान जल गया है। मैंने उनका चेहरा देखा और पूछा कि आप ठीक हैं? तो उन्होंने कहा हां, ऑफिस जला है, लेकिन सबकुछ ठीक है। कितनी अच्छी बात है ना। उनका ऑफिस पूरा जल गया था, लेकिन मन पर जलन का असर नहीं था। तो मन की स्थिति ने क्या किया कि परिस्थिति के ऊपर मन की स्थिति हावी हुई। और अगर ध्यान नहीं रखा तो मन की स्थिति पर परिस्थिति हावी होती है। जब मन की स्थिति परिस्थिति पर हावी होती है तो हम जीत जाते हैं। कहा भी जाता है- मन जीते जग जीते। हम उल्टा चलते हैं। हम कहते हैं सबकुछ जब मेरे अनुसार होगा तो हम खुश होंगे। मतलब पहले जग पर जीत पाएंगे फिर मन पर जीत पाएंगे।

अपना एक हाथ आगे करो और देखो कि हाथ में दर्द हो रहा है। यह एक परिस्थिति है। सुबह आप उठे ये बिल्कुल सुन्न, हाथ में बहुत दर्द हो रहा है। इसको अनुभव करो। ये परस्थिति है। जब ये हाथ पूरा दर्द हो रहा है तो क्या मन भी दर्द होगा? आप अनुभव करके देखो तो पता चलेगा। हाथ दर्द होगा तो क्या मन में भी दर्द होगा? नहीं। मन में कब दर्द होगा, जब हम ये सोचने लगेंगे कि हमारे हाथ में यहां दर्द हो रहा है। जब तक आप सोचेंगे नहीं तब तक मन में दर्द नहीं हो सकता। लेकिन जब आपने सोचना शुरू किया कि क्यों दर्द हो रहा है, क्या हुआ, मुझे कैसे हो गया, अब आगे क्या होगा, तब सर में दर्द शुरू हो जाएगा। जब हाथ में दर्द हो रहा था तब मन में दर्द नहीं होगा। जब सोचने लगेंगे तब होगा। फिर चिंता होने लगेगी, घबराएंगे, डरेंगे तो जो हाथ का दर्द है वो और बढ़ जाएगा।

ये परिस्थिति है और यह मन की स्थिति है। परिस्थिति ठीक नहीं है। मन की स्थिति पर परिस्थिति का असर नहीं पड़ता। मन की स्थिति पर कब असर पड़ता है? जब हम परिस्थिति के बारे में सोचना शुरू करते हैं। लेकिन जब मन की स्थिति पर असर पड़ता है तो मन की स्थिति का असर परिस्थिति पर पड़ना शुरू हो जाता है। तो कौन शक्तिशाली हुआ- परिस्थिति या मन की स्थिति?

पुणे-महा.। जगदम्बा भवन में आयोजित कार्यक्रम में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी और ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी को आध्यात्मिक क्षेत्र में योगदान देने हेतु 'वुमेन आइकॉन अवॉर्ड 2025' से सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में साथ हैं इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड के उपाध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

राहुरी-महा.। त्रिमूर्ति शिवजयंती महोत्सव पर आयोजित रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग मंदिर की प्रतिकृति का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राहुरी महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ के माननीय कुलगुरू डॉ. साताप्पा खरबड़े, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नंदा बहन तथा शहर के अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य लोग।

नेपियर टाउन-जबलपुर(म.प्र.)। महाकुंभ में नरसिंह मंदिर की पीठ पर नरसिंह पीठाधीश्वर के जगद्गुरू डॉ. स्वामी नरसिंह देवाचार्य जी महाराज के पद पर प्रतिष्ठित होने पर फूलों का गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. भावना बहन। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. पुष्पा पांडे, ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. संतोष एवं ब्र.कु. परेश।

खजुराहो-म.प्र.। शिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित 'आओ आध्यात्मिक अलख जगाएं, एक दिव्य समाज बनाएं' कार्यक्रम पर लगाई झांकी में शिव परमात्मा एवं शंकर-पार्वती जी की आरती-पूजन करते हुए छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी। कार्यक्रम में उपस्थित रहे खजुराहो की महारानी साहब कविता राजे, रचना पटेरिया,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष,राजनगर, निर्मल अग्रवाल,अग्रवाल महिला समाज अध्यक्ष, संतोष पटेरिया कवियत्री,राजनगर, अनुज कृष्ण महाराज जी,पीठाधीश्वर चौवर धाम सरकार, राकेश जैन,जैन समाज के अध्यक्ष, वीरेन्द्र तिवारी,ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष, विजय कुमार अग्रवाल,मयूर फैशन हाउस, राम प्रकाश गुप्ता,गुप्ता समाज अध्यक्ष, सुनील पांडे,अध्यक्ष राष्ट्रीय पत्रकार संगठन इंडियन फेडरेशन वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन जिला छतरपुर, शिल्पी जैन,स्वर्ण उदय एवं अरिहंत महिला मंडल अध्यक्ष सहित अन्य अतिथिगण।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर 7 स्थित पीस ऑडिटोरियम में होली के उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं राधे-कृष्ण के रूप में छोटे बच्चे और डिवाइन ग्रुप के बच्चे।

सिवनी-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र सिवनी ब्र.कु. नीतू को आध्यात्मिक जागृति क्षेत्र में कार्य करने हेतु लोकमाता आहिल्याबाई होल्कर के त्रिशताब्द जन्म समारोह समिति द्वारा सम्मानित किया गया।

बालागाम-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सभा को संबोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता। मंचासीन हैं ब्र.कु. अल्पा, भाजपा जिला महिला मोर्चा के माजी प्रमुख प्रवीणा पटेल एवं महिला मंडलप्रमुख प्रमिला।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

सटाना-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वैशाली सोनोने का तालुका अध्यक्ष के रूप में पद ग्रहण समारम्भ कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. अंजुलता बहन, ब्र.कु. सोनू बहन, केपीएम फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष सुनील परदेसी, वात्सल्य हॉस्पिटल के डॉ. राहुल सोनोने, सुष्मिता सोनोने तथा अन्य शहर के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

सारनी-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'सभ्य समाज की आधारशिला' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अनीता, लीला चौधरी,प्रिंसिपल माध्यमिक शाला पाठखेड़ा, सरोज विश्वकर्मा,अध्यक्षा महिला मंडल,पाथाखेड़ा, डॉ. मंदा देशमुख तथा अन्य।

स्वास्थ्य

जीरा, सौंफ, धनिया का इस तरह करें सेवन

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हम न जाने कितने ज़्यादा प्रयास करते हैं। दिनभर खानपान से लेकर वर्कआउट का ध्यान रखते हैं, ताकि खुद को हेल्दी और फिट रख सकें। खासतौर पर हममें से कई लोग अपने बढ़ते वजन से परेशान होने के बाद घंटों एक्सरसाइज़ और खानपान पर स्ट्रिक्ट रूप से ध्यान देना शुरू कर देते हैं लेकिन ऐसा करने से आपके शरीर पर कई बार विपरित असर भी पड़ता है। इसलिए एक सही डाइट की ज़रूरत होती है। खासतौर पर अपने शरीर में मौजूद गंदगी को क्लीन करना बहुत ही ज़रूरी होता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका वजन सही रहे और आप फिट और हेल्दी रहें, तो जीरा, सौंफ और धनिया से तैयार पानी का सेवन करें। यह एक ऐसा मिश्रण है जो आपके शरीर की कई समस्याओं को कम कर सकता है। आइए जानते हैं जीरा, सौंफ, धनिया का पानी पीने से सेहत को क्या लाभ हो सकते हैं...

बॉडी को डिटॉक्स करे...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी शरीर को डिटॉक्स करने में मदद कर सकता है। रोज़ाना सुबह खाली पेट इसका सेवन करने से शरीर में जमा गंदगी और टॉक्सिंस बाहर निकल जाते हैं। यह लिवर और किडनी को हेल्दी रखने में मदद करता।

पाचन में सुधार करे...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से पाचन तंत्र दुरुस्त होता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व पाचन क्रिया को बेहतर करने में मदद करते हैं। इसका सेवन करने से कब्ज, गैस, अपच और एसिडिटी जैसी पाचन संबंधी समस्याओं से राहत मिल सकती है। सुबह खाली पेट इसका सेवन करने से गट हेल्थ में सुधार होगा।

वजन घटाने में मददगार...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से वजन घटाने में मदद मिल सकती है। दरअसल, इसके सेवन से मेटाबॉलिज़्म बूस्ट होता है, जिससे शरीर में जमा अतिरिक्त फैट को तेजी से बर्न करने में मदद मिलती है। इसके नियमित सेवन से धीरे-धीरे वजन कम होने लगेगा।

इम्यूनिटी बूस्ट करे...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से इम्यूनिटी बूस्ट हो सकती है। दरअसल, इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं, जो इम्यूनिटी को मजबूत करने में मदद करते हैं। इसके सेवन से आप सर्दी, जुकाम, वायरल और बैक्टीरियल संक्रमणों से बचाव में मदद मिल सकती है।

स्किन की परेशानियां...

जीरा, सौंफ और धनिया से तैयार पानी पीने से आपकी स्किन संबंधी परेशानियां कम हो सकती हैं। क्योंकि यह पानी आपके शरीर में हार्मोन को बैलेंस करता है। साथ ही शरीर में मौजूद गंदगी को बाहर करता है, जिससे आपके चेहरे पर चमक आ सकती है।

दिल को रखे स्वस्थ...

जीरा, धनिया और सौंफ के पानी का सेवन करने से दिल को स्वस्थ रखा जा सकता है। दरअसल, इसमें फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं। इसके नियमित सेवन से दिल की बीमारियों का जोखिम कम हो सकता है।

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी कैसे बनाएं?

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी बनाने के लिए सबसे पहले एक पैन में एक गिलास पानी गर्म कर लें। अब इसमें एक चम्मच जीरा, एक चम्मच धनिया और एक चम्मच सौंफ डालकर उबालें। इसे तब तक उबालें, जब तक पानी आधा न रह जाए। उसके बाद इस पानी को एक कप में छान लें और इसका सेवन करें। या फिर आप इन तीनों चीज़ों को रातभर भिगोकर भी सुबह इसका पानी इसी विधि से बना सकते हैं।

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी स्वास्थ्य के लिए कई तरह से लाभकारी हो सकता है। हालांकि, अगर आपकी परेशानी काफी ज़्यादा बढ़ रही है तो इस स्थिति में डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें।

वाशी-नवी मुंबई(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए मुकाम्बिका महिला मंडल की अध्यक्षा रत्ना गौड़ा, शालिनी शेट्टी, सरोजनी, मोहिनी, विद्या अंचन, हेमलता, इंदिरा शेट्टी, जयंती शेट्टी, शकुंतला राधा पुजारी तथा अन्य।

पाटन-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम दीदी, हीरलबेन परमार,अध्यक्षा नगर पालिका, लीलाबेन स्वामी,मंत्री श्री भगिनी समाज, कामीनाबेन योग शिक्षिका, डॉ. किंजलबेन पटेल,बाबासाहेब अंबेडकर विश्वविद्यालय पाटन की क्षेत्रीय निदेशिका, वालीबेन पटेल,अध्यक्षा भगिनी समाज, मनीषाबेन ठक्कर, भावनाबेन पटेल,ऑर्टस कॉलेज, दर्शना बेन पटेल,अध्यक्षा मानवाधिकार महासंघ उत्तर गुजरात, प्रतिमाबेन,अर्जुन ज्वैलर्स, ज्योतिबेन पटेल,आयकर व्यवसायी, डॉ. भूमिबेन पटेल,दंत चिकित्सक तथा अन्य।

ओक्लाहोमा-यूएसए। ब्रह्माकुमारीज़ ओक्लाहोमा सिटी सेंटर व संयुक्त राष्ट्र संघ ओक्लाहोमा सिटी चैप्टर के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित 'एक साथ उठनाः महिला मुक्ति और सशक्तिकरण के लिए एकत्र होना' विषयक कार्यक्रम में ब्र.कु. बिन्दु बहन को ओक्लाहोमा राज्य से आधिकारिक प्रशस्ति पत्र प्रदान कर 2025 के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की महिला राजदूत के रूप में मान्यता दी गई। जिसके पश्चात् समूह चित्र में अन्य गणमान्य महिलाएं।

मिलपिटास-यूएसए। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी-महिलाओं का उत्सव कार्यक्रम में इंडो अमेरिकन्स एसोसिएशन के सहयोग से सैन फ्रांसिस्को में भारत के महावाणिज्य दूतावास द्वारा सामुदायिक सेवा के प्रति समर्पण और सकारात्मक बदलाव लाने में असाधारण नेतृत्व के लिए एक 'अग्रणी महिला' के रूप में ब्र.कु. कुसुम को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं डॉ. श्रीकर रेड्डी और धर्मपत्नी प्रतिमा रेड्डी,सैन फ्रांसिस्को, सैन फ्रांसिस्को स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास की पत्नी प्रथिमा कोप्पुला, कैलिफोर्निया के अटॉर्नी जनरल, वकील, राजनीतिज्ञ रॉब बोन्टा तथा अन्य।

आरंग-छ.ग.। आचार्य युवराज पाण्डे से मुलाकात के पश्चात् चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता,समोदा।

भागवत प्राप्ति सभी को रास आती है लेकिन उसका रस लेने के लिए ज्ञान और शिक्षा की सम्पूर्ण धारणा अति आवश्यक है। परमात्मा को पूरी तरह से समाने वाली, अपने अन्दर समाकर सहज तरीके से अपने चेहरे और चलन से सभी को वही परमात्म अनुभूति कराने वाली, हमारी अति स्नेही आदि रत्न और इस जहान में चलते-फिरते फरिश्ते की झलक और उसका प्रतिबिम्ब हम सबके ऊपर पड़े वो अनुभव उन्हीं के कमल मुख द्वारा हम आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि आप भी परमात्म सुख को एक फिल्म की भांति अनुभव करते जाएं और कहें कि सच में यही जहान के नूर हैं...

पंजाब का शेर दादी चंद्रमणि...

बाबा का मात-पिता के सम्बन्ध में, कम्बाइंड स्वरूप में साक्षात्कार हुआ। ऐसे देखा जैसे कापूस होती उसका धरती से आकाश तक लाइट का आकार, मात-पिता का कम्बाइंड स्वरूप बहुत प्यारा लगा। उसमें बहुत आकर्षण था। लगातार तीन दिन तक साक्षात्कार होता रहा। बाबा के साथ-साथ कभी श्रीकृष्ण और कभी श्रीविष्णु का साक्षात्कार होता रहा।

दादी कहती है आप सबने तो भागवत सुना होगा, तो गीता भी पढ़ी होगी। अगर अन्तर नहीं पता तो भागवत में भगवान की लीला और चरित्र का गायन होता है और गीता में ज्ञान और शिक्षा मिलती है। तो हमें परमात्मा ने भागवत भी सुनाई और साथ में गीता भी पढ़ाई। माना भगवान की लीला सुनने का और भागवत के साथ ज्ञान दोनों अगर इकट्ठे हों तो आपको अपने भाग्य का पता चलेगा, क्योंकि लीला सुनने में बहुत मज़ा आता लेकिन गीता का ज्ञान अकेले आपको सुकून नहीं देगा।

हमारे लौकिक परिवार में सात बहनें और एक भाई हैं। बाबा हमेशा हमको कहते थे भक्ति का फल तो ज्ञान मिलता है और हमारे लौकिक परिवार में भक्ति जबरदस्त थी। हम पूजा-पाठ करने के बाद ही भोजन करते थे। आप सबको एक बात सुनाते हैं कि हमने जो भागवत और गीता पढ़ी आज भी हम उसका प्रैक्टिकल अनुभव करते हैं। और एक नशे की बात सुनाते हैं, कईयों ने अपने मात-पिता को छोड़ दिया और कईयों को मात-पिता ने छोड़ दिया लेकिन हमारे मात-पिता, हमारा सारा परिवार, मात-पिता सहित सब समर्पित हो गए। साथ में जो परिवार के सदस्य कोई बच गया वो सब आज भी अच्छे सम्बन्ध सम्पर्क में हैं। मैं सात बहनों में छठवें नम्बर की थी। जब ज्ञान में आई तो तेरह वर्ष की थी और नौवीं क्लास में पढ़ती थी, आठ वर्ष से भक्ति करती थी। इसका एक कारण था कि एक ज्योतिष ने कह दिया कि ये रहेगी नहीं, माना कि शरीर छोड़ देगी इसलिए यज्ञ-तप करो। इसके कारण मैं परमात्मा से मात-पिता के सम्बन्ध से बातें करती थी और बड़ा प्यारा लगता था। कहती थी मैं तेरी योगिन बनूंगी, और योगिन बनने की चाहना भी बहुत थी। फिर हमारे घर में एक घटना घटी। जिसमें मेरा एक भाई जिसकी शादी होनी थी उसने पहले ही शरीर छोड़ दिया, जिसके कारण माँ को बहुत दुःख हुआ, उसी समय मेरी लौकिक बहन के पति ने भी शरीर छोड़ दिया। और उसी रात्रि बाबा का मात-पिता के सम्बन्ध में, कम्बाइंड स्वरूप में साक्षात्कार हुआ, ऐसे देखा जैसे कापूस होती है उसका धरती से आकाश तक लाइट का आकार, मात-पिता का कम्बाइंड स्वरूप बहुत प्यारा लगा, जिसमें बहुत आकर्षण था। लगातार तीन दिन तक साक्षात्कार होता रहा। बाबा के साथ कभी श्रीकृष्ण और कभी श्रीविष्णु का साक्षात्कार होता रहा।

- क्रमशः

खरोरा-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शासकीय महाविद्यालय की प्रिंसिपल शंपा चौबे, भाजपा मंडल अध्यक्षा सोना वर्मा, नगर पंचायत अध्यक्षा सुनीता सोनी, आईटीबीपी डिप्टी सुपरीटेंडेंट की धर्मपत्नी ललिता चांद को ईश्वरीय सौगात एवं पटका पहनाकर सम्मानित करने के पश्चात् साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. सुनीता।

बेगमगंज-म.प्र.। होली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी,भोपाल, ब्र.कु. डॉ. पीएस ठाकुर, ब्र.कु. ऋचा, ब्र.कु. मेघा, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. सुरेश, ब्र.कु. प्रीतम, ब्र.कु. वृंदावन, ब्र.कु. बीएल शर्मा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

खुशखबरी...

आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

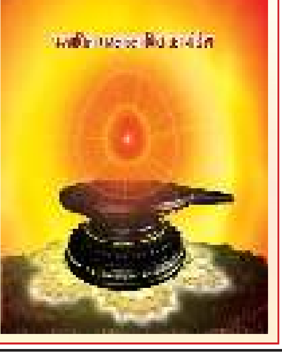

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

नवसारी-गुज.। शिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में प्रिंसिपल विष्णु खरादी,वेटरनरी कॉलेज,नवसारी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी। साथ हैं ब्र.कु. भानु बहन, ब्र.कु. राजेश्री तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

परमात्म ऊर्जा

वर्तमान समय चारों ओर के पुरूषार्थियों के पुरूषार्थ में मुख्य दो बातों की कमज़ोरी व कमी दिखाई देती है, जिस कमी के कारण जो कमाल दिखानी चाहिए वह नहीं दिखा पाते, वह दो कमियां कौन-सी हैं? एक तरफ अभिमान, दूसरी तरफ है अनजानपन। यह दोनों ही बातें पुरूषार्थ को ढीला कर देती हैं। अभिमान भी बहुत सूक्ष्म चीज़ है। अभिमान के कारण कोई ने ज़रा भी कोई उन्नति के लिए इशारा दिया तो सूक्ष्म में न सहनशक्ति की लहर आ जाती है व संकल्प आता है कि यह क्यों कहा? इसको भी अभिमान सूक्ष्म रूप में कहा जाता है। कोई ने कुछ इशारा दिया तो उस इशारे को वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उन्नति का साधन समझकर उस इशारे को समा देना व अपने में सहन करने की शक्ति भरना - यह अभ्यास होना चाहिए।

सूक्ष्म में भी वृत्ति व दृष्टि में हलचल मचती है- क्यों, कैसे हुआ? इसको भी देही अभिमानी की स्टेज नहीं कहेंगे। जैसे महिमा सुनने के समय वृत्ति व दृष्टि में उस आत्मा के प्रति स्नेह की भावना रहती है, वैसे ही अगर कोई शिक्षा का इशारा देते हैं तो उसमें भी उसी आत्मा के प्रति ऐसे ही स्नेह की, शुभचिन्तक की भावना रहती कि यह आत्मा मेरे लिए बड़ी से बड़ी शुभचिन्तक है, ऐसी स्थिति को कहा जाता है देही अभिमानी। अगर देही अभिमानी नहीं हैं तो दूसरे शब्दों में अभिमान कहेंगे। इसलिए अपमान को सहन नहीं कर पाते। और दूसरे तरफ है बिल्कुल अनजान, इस कारण भी कई बातों में धोखा खाते हैं। कोई अपने को बचाने के लिए भी अनजान बनता है, कोई रियल भी अनजान बनता है। तो इन दोनों बातों के बजाए स्वमान जिससे अभिमान बिल्कुल खत्म हो जाए और निर्माण, यह दोनों बातें धारण करनी हैं। मन्सा में स्वमान की स्मृति रहे और वाचा में, कर्मणा में निर्माण अवस्था रहे तो अभिमान खत्म हो जाएगा। फिलॉस्फर हो गए हैं लेकिन स्पिरिचुअल नहीं बने हैं अर्थात् यह स्पिरिट नहीं आई है तो जो आत्मिक स्थिति में, आत्मिक खुमारी में रहते हैं- इसको कहा जाता है स्पिरिचुअल। आजकल फिलॉस्फर ज़्यादा दिखाई देते हैं, स्पिरिचुअल पॉवर कम है। स्पिरिट एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखा सकती है! जैसे जादूगर एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखाते हैं, वैसे स्पिरिचुअलिटी वाले में भी कर्त्तव्य की सिद्धि आ जाती। उनमें हाथ की सिद्धि होती है। यह है हर कर्म, हर संकल्प में सिद्धि स्वरूप।

सिद्धि अर्थात् प्राप्ति। सिर्फ प्वाइंट्स सुनना-सुनाना- इसको फिलॉसफर कहा जाता है। फिलॉसफी का प्रभाव अल्पकाल का पड़ता है, स्पिरिचुअलिटी का प्रभाव सदा के लिए पड़ता है। तो अभी अपने में कर्म की सिद्धि प्राप्त करने के लिए रूहानियत लानी है। अनजान बनने का अर्थ है कि जो सुनते हैं उसको स्वरूप तक नहीं लाते हैं। योग्य टीचर उसको कहा जाता है जो अपने शिक्षा स्वरूप से शिक्षा देवे। उनका स्वरूप ही शिक्षा सम्पन्न होगा। उनका देखना-चलना भी किसको शिक्षा देगा।

जैसे साकार रूप में कदम-कदम, हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल में देखा। जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हो। किसको वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कॉमन बात है लेकिन सभी अनुभव चाहते हैं। अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराना है।

कथा सरिता

गर्मी से झुलसता रेगिस्तान, सूरज की तपिश से तपता हुआ। दूर क्षितिज पर कुछ नुकीले सिंहासन नज़र आते हैं, मानों रेत के बीच राजाओं का दरबार लगा हो। ये हैं मिस्र के पिरामिड, हज़ारों सालों से रेगिस्तान की कहानियों को अपने सीने में समेटे हुए।

आज रात चांद पूरा था और उसकी रोशनी पिरामिडों पर बिखर रही थी। एक युवा पुरातत्वविद, अली, इन प्राचीन संरचनाओं के रहस्य को सुलझाने के जुनून में वहाँ खड़ा था। वह मानता था कि पिरामिडों के अंदर कोई गुप्त कक्ष है, जिसके बारे में दुनिया को अभी तक पता नहीं चला है।

अपने साथी ओम के साथ उसने पिरामिड के एक छिपे हुए द्वार को ढूंढ निकाला था। थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद, वे दोनों मशाल जलाकर उस अंधेरे द्वार से अंदर चले गए। भीतर का रास्ता संकरा और घुमावदार था। हर कदम पर उन्हें लगता था कि कोई उन्हें देख रहा है। दीवारों पर अजीबोगरीब चित्र बने हुए थे, जिन्हें वे समझ नहीं पाए। काफी दूर चलने के बाद रास्ता एक बड़े कक्ष में खुल गया।

कक्ष के बीचों बीच एक सुनहरा ताबूत रखा हुआ था। अली और ओम सांस रोके ताबूत के पास गए। ताबूत खोलने में उन्हें थोड़ी देर लगी, लेकिन आखिरकार वो पल आ गया। ताबूत के अंदर उन्हें सोने का मुकुट पहने एक फिरौन की मूर्ति मिली। उसके हाथों में एक सोने का पाषाण था,जिसपर अजीब निशान बने हुए थे।

पाषाण को ध्यान से देखने पर उन्हें लगा कि ये निशान किसी नक्शे का हिस्सा हैं। शायद ये पिरामिड के किसी गुप्त कमरे का रास्ता बताते हैं। अचानक, कक्ष की दीवारों पर अंकित चित्र चमक उठे और कमरे के फर्श में एक छिपा हुआ द्वार खुल गया।

अली और ओम एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। रेगिस्तान के राज़ को सुलझाने का सिलसिला अभी तो शुरू हुआ था।

अली और ओम उत्सुकता से खुले हुए द्वार से नीचे उतरे। सीढ़ियां उन्हें एक लंबे गलियारे में ले गईं। गलियारे की दीवारों पर मशालों का सहारा लेकर चलते हुए उन्हें मिस्र के देवी-देवताओं के चित्र दिखाई दिए। कुछ दूर चलने के बाद गलियारा एक और कक्ष में खुल गया।

यह कक्ष पिछले वाले से बिल्कुल अलग था। चारों तरफ किताबें रखी हुई थीं, जिनके पन्ने किसी अज्ञात भाषा में लिखे हुए थे। कमरे के बीचों-बीच एक मेज पर एक ग्लोब रखा था, जो किसी जादुई क्रिस्टल से बना हुआ लग रहा था। जैसे ही अली ने उस ग्लोब को छुआ, कमरे में रोशनी फैल गई और दीवारों पर नक्शे उभर आए।

रहस्यमयी पिरामिड

नक्शे में तारामंडल, नदियां, पहाड़ और कुछ अपरिचित शहर दिखाई दे रहे थे। अली को लगा कि यह कोई खज़ाने का नक्शा हो सकता है। उसी समय, ग्लोब के ऊपर से एक आवाज़ गूंजी। आवाज़ धीमी और गंभीर थी।

"स्वागत है, खोजियों। क्या तुम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तैयार हो?"

अली और ओम चौंक गए। यह फिरौन की आत्मा थी, जो हज़ारों साल बाद भी इस कक्ष की रक्षा कर रही थी। अली ने हिम्मत जुटाकर जवाब दिया, "हाँ, हम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को सीखने और दुनिया के सामने लाने के लिए तैयार हैं।"

फिरौन की आत्मा मुस्कुराई, तो लो, यह ज्ञान तुम्हारा है। लेकिन इसे संभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।" फिर अचानक रोशनी कम होने लगी और आवाज़ भी धीमी पड़ गई। आखिरकार, सबकुछ शांत हो गया। अली और ओम ने रेगिस्तान के राज़ को तोड़ दिया था, प्राचीन मिस्र के खज़ाने को ढूंढ लिया था। अब उनके सामने चुनौति थी, इस ज्ञान को समझने और दुनिया के साथ साझा करने की।

रेगिस्तान की रात खामोश थी, लेकिन पिरामिड के अंदर खोज जारी थी। अली और ओम, फिरौन की आत्मा से मिले ज्ञान को समझने और उसका अध्ययन करने में लगे थे। उन्होंने प्राचीन भाषाओं के विशेषज्ञों और इतिहासकारों की मदद ली। धीरे-धीरे, उन नक्शों और चित्रों का रहस्य खुलने लगा।

उन्होंने जाना कि नक्शे मिस्र के विभिन्न खज़ाने और गुप्त स्थानों को दर्शाते हैं। कुछ नक्शे तो ऐसे भी थे जो गुप्त सुरंगों और भूमिगत कक्षों का रास्ता बताते थे। अली और ओम ने अपनी खोज जारी रखने का फैसला किया।

उन्होंने मिस्र सरकार और पुरातत्व विभाग से अनुमति ली और फिरौन के खज़ाने की खोज पर निकल पड़े। उनकी यात्रा उन्हें मिस्र के विभिन्न भागों में ले गई। उन्होंने रेगिस्तान के ऊंचे टीलों, घने जंगलों और प्राचीन मंदिरों का पता लगाया। रास्ते में, उन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ा।

कुछ लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तो कुछ ने उनसे खज़ाना छीनने की कोशिश की। लेकिन अली और ओम हार नहीं माने। उनकी हिम्मत और दृढ़ संकल्प ने उन्हें आगे बढ़ाया।

कई सालों की कड़ी मेहनत और लगन के बाद, अली और ओम को सफलता मिली। उन्होंने फिरौन के खज़ाने के कई हिस्सों को ढूंढ निकाला। इनमें सोने के आभूषण, चांदी के सिक्के, प्राचीन हथियार और दुर्लभ कलाकृतियां शामिल थीं।

उन्होंने अपनी खोजों को दुनिया के साथ साझा किया और मिस्र के इतिहास के बारे में हमारी समझ को गहरा करने में मदद ली। अली और ओम को उनकी बहादुरी और ज्ञान के लिए सम्मानित किया गया। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ा इनाम यह था कि उन्होंने मिस्र के पिरामिडों के रहस्यों को सुलझाया और प्राचीन मिस्र के खज़ाने को दुनिया के सामने लाया।

सीखः यह कहानी हमें सिखाती है कि जिज्ञासा, साहस और दृढ़ संकल्प से हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

गंजबासौदा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रूकमणी, ब्र.कु. रेखा, श्रीमती शशि यादव,नगर पालिका अध्यक्षा, ममता जैन,अध्यक्षा रक्त सेवा समिति, निधि शर्मा,एनसीसी मेजर, विद्या यादव,सहकारी बैंक मैनेजर, लक्ष्मी शर्मा,अध्यक्षा सावित्री महिला मंडल, डॉ. नीलिमा शर्मा,समाजसेविका, सीमा राठौड़,डायरेक्टर फ्लावर स्कूल, शबनम बहन तथा अन्य।

व्यर्थ होते समय को बचाने के उपाय...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

उन्हीं के द्वारा लिखे गए समय के ऊपर और उसमें भी विशेष संगम के समय के महत्व के बारे में उन्हीं के शब्दों में कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं...

संगमयुग का यह अनमोल समय है। सारे कल्प में यह वही समय है जब हम भगवान से पूरा वर्सा लेने का पुरूषार्थ करके ऊंचे से ऊंचा भविष्य बना सकते हैं। इसका एक-एक क्षण कितना मूल्यवान है! अगर हम उसका सही रीति से उपयोग करें, प्रयोग करें तो मालामाल हो जाएं। अगर हम उसका उपयोग ठीक रीति से नहीं करें, गँवा दें तो कितना बड़ा नुकसान है! व्यक्ति आमतौर से कोई कार्य करता है तो देखता है कि इसके लाभ और हानि क्या हैं, जिसको हम निर्णय कहते हैं। निर्णय में माइनस और प्लस प्वाइंट सोचा जाता है। संगम का एक सेकण्ड, मिनट व्यर्थ गंवाने से कितना भारी नुकसान है! और फिर यह रिपीट(पुनरावृत्त) भी होता है। रिकरिंग लॉस है। फिर-फिर होने वाला नुकसान। यह नुकसान ऐसा है जो फिर-फिर होगा। एक दफा गँवा बैठे और आगे चलकर ठीक कर देंगे, ऐसा नहीं। गँवाया सो गँवाया हर कल्प, कल्प कल्पान्तर गँवाना पड़ेगा। भगवान का संग मिला, वह टीचर के रूप में मिला, सद्गुरू के रूप में मिला। वह पारलौकिक बाप हमें पारलौकिक वर्सा देने के लिए आया है। इतना प्यार से वह हमें मार्गदर्शन करता है, फिर हम उस समय को गँवा दें तो क्या कहेंगे? किन-किन बातों में हम अपना समय व्यर्थ गँवाते हैं- यह चर्चा करेंगे।

"जिसे आप पढ़ रहे हैं, अपने आप को जिनकी शिक्षाओं से गढ़ रहे हैं तो उनके बारे में जानना भी ज़रूरी है। भ्राता जगदीशचन्द्र हसीजा ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य प्रवक्ता रहे। उन्हें सारे वेदों, शास्त्रों और आध्यात्मिकता की गहराई का ही सिर्फ ज्ञान नहीं था बल्कि वे उन भाग्यशाली आत्माओं में से एक थे जोकि स्वयं भगवान ने उन्हें चुना और साथ-साथ सृष्टि परिवर्तन के कार्य में अपना प्रमुख सहयोगी भी बनाया। वे जीवन में समय के सदुपयोग के ऐसे प्रबंधक थे जिन्हें जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ गँवाना गंवारा नहीं था। जिन्होंने मिले हुए जीवन के प्रत्येक पल प्रभु के कार्य में अर्पण कर दिए। खुशी-खुशी से, कठिन से कठिन परमात्मा द्वारा रचे ईश्वरीय यज्ञ का हरेक कार्य इतना सहज और सहर्ष रूप से किया जो आज भी हम सबके सामने पदचिन्ह हैं। ऐसे परमात्मा के प्रभु प्रिय आदि रत्न की पुण्य तिथि पर हृदय की गहराईयों से भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।"

प्रभाव और उदासीनता से कोसों दूर रहना

इसमें हैं, इम्प्रेशन(प्रभाव), डिप्रैशन। उदासीनता एक विश्वव्यापी बीमारी है। बहुत लोग ऐसे हैं जो दिन में कई दफा डिप्रैस्सड होते हैं। अभी देखें तो ठीक हैं, खुश हैं परन्तु थोड़े समय के बाद देखें तो डिप्रैस्सड हैं। बार-बार ऐसा होता है। उसके कई कारण हैं। जब व्यक्ति यह सोच लेता है कि मैं किसी काम का नहीं। मैं बिल्कुल बेकार हूँ, निकम्मा हूँ। देखता है कि दूसरा व्यक्ति आगे निकल रहा है, उसकी वाह, वाह हो रही है, उसे कुछ लाभ हो रहा है, मैं क्या कर रहा हूँ! मैं किसी काम का आदमी नहीं हूँ। खुद ही खुद के लिए कहता है कि मेरे जैसा निरुपयोगी और कोई नहीं। आमतौर पर उर्दू में चिट्ठी में लिखते थे- नाचीज़। उस समय एक रिवाज़ जैसा था कि लोग अपने को कहते थे और लिखते थे कि नाचीज़। नाचीज़ माना मैं कुछ नहीं। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, दासों का दास हूँ। पाँव की धूल हूँ। कई लोग समझते हैं कि ऐसा कहना या ऐसा लिखना नम्रता है। लेकिन कुछ लोग अपने आपको अनुभव भी ऐसा करते हैं। ऐसी निकृष्ट भावना में चले जाते हैं। भक्तिमार्ग में माया से जो हार हमारी होती है उसका एक कारण यही है कि हम समझ बैठते हैं कि हम तो निकम्मे हैं, किसी काम के नहीं। हे प्रभु, आप ही हमारे ऊपर कृपा करो, हमें छुड़ाओ। हम तो नीच हैं, पापी हैं। ऐसे अपने को खुद गाली देते थे। यह हीन भावना की महसूसता है, आत्म विश्वास की कमी है। अब संगमयुग में यह उल्टा हो गया।

भगवान आकर कहते हैं, 'मीठे बच्चे, तुम तो इष्ट हो। देखो, तुम्हें आवाज़ सुनाई नहीं देती, तुम्हारे भक्त तुम्हें याद कर रहे हैं, पुकार रहे हैं? शान्तिदेवा, शान्तिदेवा कह रहे हैं। ये आप ही तो थे जिन्होंने उनको शान्ति दी थी।" भूत और भविष्य जो पुनरावृत्त होता है, बाबा वह बताते हैं। भूतकाल पुनरावृत्त होता है। इसीलिए कहते हैं भूत, भविष्य बनता है चक्र का सब राज़ समझाकर बाबा कहते हैं कि पहले तुम क्या थे! आप ही सृष्टि के आधारमूर्त हो, उद्धारमूर्त हो। बाबा फिर से हमारे में आत्म विश्वास जाग्रत करते हैं और उसका विकास कराते हैं। परन्तु हम कोई बात होने पर, कोई परिस्थिति आने पर अपना विश्वास खो बैठते हैं।

नांदेड़-वसंत नगर(महा.)। जिला न्यायालय में आयोजित 'स्पिरिचुअल पॉवर ऑफ हेल्दी एंड लॉफुल सोसाइटी' सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में बी.डी. राठी,पूर्व न्यायाधीश,म.प्र. उच्च न्यायालय इंदौर एवं उपाध्यक्ष न्यायविद विंग,माउंट आबू, सीवी मराठे,डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन्स जज, एडवोकेट गोदमगांवकर,प्रेसिडेंट नांदेड़ बार एसोसिएशन, ब्र.कु. श्रद्धा,ज्यूरिस्ट विंग,माउंट आबू, राजयोगी ब्र.कु. नथमल,कोऑर्डिनेटर ब्रह्माकुमारीज़,कट्टक, माधवराव पाटिल शेळगावकर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति बहन तथा अन्य।

कंधार-नांदेड़(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय श्रीमद्भागवत कथाकार श्री देवकीनंदन ठाकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

जमनीपाली-कोरबा(छ.ग.)। शिवरात्रि के अवसर पर डायमंड जुबली भवन में आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रुकमणि दीदी। साथ हैं जवाहर नवोदय विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती शान्ति महंतो, सीआईएसएफ इंस्पेक्टर उषा रानी, साईं मंदिर रामनगर के पंडित सदानंद महाराज, अक्षय हॉस्पिटल कोरबा से डॉ. के.सी. देबनाथ एवं ब्र.कु. बिंदु।

गौरव पैलेस कॉलोनी-रतलाम(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए बीजेपी अंबेडकर महिला मोर्चा अध्यक्ष, केसरिया जागृति मंच में राष्ट्रीय संयोजिका रेखा गौतम, बैचलर ऑफ फिज़ियोथैरेपिस्ट डॉ. कृति जैन, बीडीएस डॉ. श्वेता सोनगरा, ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. आरती तथा ब्र.कु. श्वेता।

मुलुंड-मुंबई। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रतिभाशाली नारी गौरव सम्मान समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों की 10 प्रतिष्ठित महिलाओं को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, ब्र.कु. डॉ. लाजवंती बहन, मनीषा सचिन रूपारेल मांगे,पॉवर वुमेन, हेमलताबेन अरिनाश माली,समाजसेविका, हेमलीबेन गाला,शिक्षिका, संगीताबेन मनीष पटेल,सामाजिक कार्यकर्ता, नंदाबेन निलेश ठक्कर,रेलवे महिला सशक्तिकरण संगठन, लेडी पुलिस इंस्पेक्टर, कोमिला जयंत गडक,कवियत्री एवं फार्मासिस्ट, शोनेली ठाकेर,महिला उद्यमिता कोच और वेदीका,बीएमसी कम्युनिटी डेवलपमेंट ऑफिसर। मौके पर उपस्थित रहे प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जे.जे. रावल,पूर्व निदेशक,नेहरू तारामंडल तथा अन्य।

संकेत पार्क-हडपसर(महा.)। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर संकेत पार्क-2 सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गौरी, काले बोराटे पुलिस स्टेशन के पुलिस निरीक्षक मानसेन पाटील, जीवन बापू जाधव,भाजपा पुणे शहर उपाध्यक्ष, बालासाहेब ससाणे,अध्यक्ष,श्रमिक नागरिक पतसंस्था, पूर्व विधायक महादेव अण्णा बाबर, पूर्व नगरसेवक मारुति आबा तुपे, डॉ. चंद्रकांत शेंडकर आदि की उपस्थिति रही।

भुज-गुज.। कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. ब्र.कु. गीता दीदी,भीनमाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. बाबू भाई, ब्र.कु. इला, प्रादेशिक प्रमुख रीटा जी, अखिल भारतीय महिला मंडल प्रमुख अमिता जी, नारी रत्न कंचन जी, महामंत्री उषा जी, तथा अन्य।

ज्ञान रतन हैं...ये केवल इनसे सीखा

- ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

सर्व प्रथम परमात्मा के घर का अनुभव इसको हम पहला अनुभव भी कहें तो कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे हम सभी डायमंड हॉल में जाते हैं और परमात्मा के महावाक्य चल रहे होते हैं, उसमें जो कुछ भी सुनाया जा रहा होता है तो उस समय हम सब उतना ज़्यादा उस बात को नहीं समझ पाते क्योंकि नये-नये होते हैं। और शुरू की बात है उस समय की जो स्थिति होती है उस समय वो बात समझ नहीं आ रही होती तो हमें लगता है कि क्या है! लेकिन जैसे ही आप धीरे-धीरे इस ज्ञान को समझने लग जाते हैं तो उस ज्ञान को समझने के बाद उसको अन्दर उतारने के लिए उसके मनन-चिंतन की अति आवश्यकता होती है।

तो हमारा अनुभव दादी जी के साथ यही है कि जब हम सभी भट्ठी में समर्पित भाईयों की जाते थे तो उस समय दादी जी की क्लासेज होती ही थी निश्चित रूप से दो से तीन लगभग, तो उसमें दादी एक-एक चीज़ की, बाबा के साथ प्यार की गहराई का अनुभव कैसे करें उसके लिए मनन-चिंतन सुनाते थे। तो हम सबके अन्दर जो प्रश्न होता है कि हमें बाबा की याद इतनी क्यों नहीं आती? या हम इतना ज़्यादा बाबा के साथ जुड़ क्यों नहीं पाते? जैसा दादी जुड़े। तो उसमें एक बार प्रश्न-उत्तर का एक सैशन रखा था और दादी से प्रश्न पूछा जा रहा था। तो उसमें किसी ने पूछा कि दादी जब हम योग में बैठते हैं तो कई बार या स्वप्नों में भी हमको गंदे या थोड़ा-सा जो चित्र नहीं आने चाहिए वो भी आते हैं, तो इसका कारण क्या है? तो दादी को ये

बात समझ ही नहीं आई, इसका मतलब ये है कि उनका जो फेस था, फेस का जो वायब्रेशन था ऐसा कि गंदे चित्र! ये क्या होते हैं? कहने का मतलब है कि उस दिन ये बात रियलाइज़ हो गई कि जिन्होंने बचपन से ही अपनी इंद्रियों को सम्भाला, अपने आप को परमात्मा के साथ रखा और ऐसे माहौल में पले-बढ़े, ऐसी आध्यात्मिक यात्रा की कि जिसमें इन सारी चीज़ों में उनका कोई वास्ता ही नहीं रहा। केवल ज्ञान, योग और कुछ नहीं। परमात्मा का साथ और कुछ नहीं। ये है परमात्मा से योग लगने और लगाने का तरीका। उस दिन ये बात अच्छे से ज़हन में उतर गई कि

ह म अच्छे से प्रयास करते हैं, आज की दुनिया में हम सब देखें कि कितना कुछ है देखने के लिए और कितना अनर्गल चीज़ें हैं, जो हमारे सामने आती हैं और उनको देखते हैं। भले वो चित्र इतने गंदे नहीं हैं लेकिन फिर भी उन चित्रों के वायब्रेशन तो हैं। जिसमें बाबा मिसिंग है, और-और बातें मिसिंग हैं, दुनियावी बातें हैं। तो आप सोचो कि हमारा कनेक्शन कैसे होगा? तो उस दिन के बाद जो मनन-चिंतन का दौर चला, जो चेंज हुआ वो आज तक भी उन्नति करवा रहा है, स्थिति बदल गई, कैसे योग करना है उसके लिए पहले रिमूव करना है। इन सारी बातों से खुद को हटाना। ये चीज़ें न देखना, न सुनना, न उसपर बात करनी। तो एक वायब्रेशन से, एक छोटी-सी बात से इतना कुछ समझने और सीखने को मिल गया जोकि हम पढ़ के भी नहीं समझ पाते थे।

दूसरा, उसी के साथ एक अनुभव है कि कोई एक सन्यासी आये थे जिन्होंने बोला कि दादी मैं चाहता हूँ कि आप 120 साल भी रहें। तो उन्होंने कहा जैसा बाबा चाहे, जैसा परमात्मा चाहे। कहने का मतलब है कि किसी सामने वाले के कहने से परमात्मा की बात, और ज्ञान की गहराई न भूलना ये सबसे बड़ी कला है। मतलब चाहे कोई कितना भी साधक है, साधु है, संत है वो अपनी बात अपने भाव से हमको कहता है लेकिन हम उसके प्रभाव में आते हैं, लेकिन दादी कभी भी किसी के प्रभाव में नहीं थी, एक के प्रभाव से प्रभावित थी और वो भी परमात्मा के।

तो ऐसी दादी रत्नों की खान कैसे थीं अब वो बात समझ में आई थी। क्योंकि दिन-रात रतन सुन रहा है, रतन ही बोल रहा है, रतन ही अपने अन्दर धारण कर रहा है। ऐसे रत्नों की खान दादी रतनमोहिनी जी ने हम सबको रत्नों से पाला है। तो मेरा ये पर्सनल अनुभव है कि दादी जी ने हमें मनन-चिंतन करना सिखाया। जीवन को कैसे जिया जाये और उसमें कुमार जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए और क्या विधियां हैं, कैसे खुद को बिज़ी रखा जाये। अलग-अलग तरीके बताये और आज भी वो हमारे साथ ज़हन में चलते हैं।

तो ऐसी हमारी परमआदरणीया, परमश्रद्धेय दादी जी को अति-अति-अति विशेष रूप से श्रद्धा सुमन।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : जब हमारे अन्दर हार्मोनल चेंजेस होते हैं तो हमारे मन के विचार ऑटोमेटिकली ही चेंज होने लगते हैं। भले वो कभी विकार के प्रति हों, या वो क्रोध या इरीटेशन के रूप में हों, तो हम ऐसा क्या करें कि शारीरिक बदलावों का हमारे ऊपर असर न हो?

उत्तर : बिल्कुल जब हार्मोनल चेंजेस होते हैं मनुष्य के शरीर में, बड़ों के में भी हो जाते हैं तो किसी में इम्प्युरिटी जाग्रत होती है तो किसी में देह के आकर्षण होते हैं। किसका झुकाव संसार की ओर बढ़ता है, और कई तरह की चीज़ें कोई इरीटेट रहने लगते हैं, किसी की खुशी चली जाती है। बहुत अच्छी दो चीज़ें इसके लिए करेंगे। पानी चार्ज करके पीना है क्योंकि कई बहनों को मैंने कराया है। बहनें पूछती हैं कि ऐसा होता है हमें। तो मैं कहता हूँ मुझे सब पता है ऐसा होता है इसमें लज्जा की बात नहीं है। तो दो स्वमान हैं- एक तो मैं परमपवित्र आत्मा हूँ या मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सात बार संकल्प करेंगे दृष्टि देकर। पानी चार्ज हो जायेगा। वो पीते रहेंगे। और अपने को चार्ज रखने के लिए मैं हमेशा एक चीज़ कहता हूँ सबको कि सवेरे उठकर कुछ सुन्दर संकल्प आपको करने चाहिए। लेकिन जब मनुष्य सवेरे उठता है तो उसका मन, उसका ब्रेन बहुत ही शांत या किसी का डल रहता है, विचार उठते नहीं हैं। तो ऐसे में दस सुन्दर विचार अपने पास रख लेने चाहिए। जिसे सवेरे उठकर पढ़ लो, फिर रिपीट कर लो। तो मन चार्ज़िंग स्थिति में आ जाएगा। और फिर इन सबके कारण जो इफेक्ट होता है माइंड पर, ब्रेन पर, व्यवहार बदलता है, इरीटेट होता है मनुष्य, उससे थोड़ा बच जाएंगे। अपनी बात अपनी किसी सखी को शेयर अवश्य करते रहना चाहिए। और बाबा सखा है तो उनसे भी शेयर करना चाहिए। अगर बाबा से करना सीख लें, उसको गुड फ्रेंड बना लें तो वो वैसे ही ठीक कर देता है।

प्रश्न : बाबा कहते हैं कि यदि कोई तुम्हें देह की दृष्टि से देखता है तो तुम्हारे ही पुरूषार्थ में कहीं कोई कमी है। तो हम क्या ऐसा पुरूषार्थ या अभ्यास करें जो लोगों की हमपर बुरी दृष्टि न जाये?

उत्तर : ये मैंने देखा प्रैक्टिकल में बहुत सारी बहनें बहुत अच्छी पर्सनैलिटी वाली होती हैं। लेकिन उनके चेहरे पर डिवनिटी होती है। कोई उन्हें बुरी दृष्टि से नहीं देखता। और बहुत बहनें ऐसी होती हैं जो बहुत सुन्दर नहीं होती लेकिन उनके प्रति लोगों की दृष्टि जाती है। हमारे अन्दर क्या है वो रिफ्लेक्ट होता रहता है ना बाहर, इसलिए कुछ अच्छे अभ्यास करते रहना चाहिए, जैसे- पवित्रता की देवी हूँ, मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, और आजकल मैं जो सीखा रहा हूँ, अपने चारों ओर शक्तियों का औरा क्रिएट करें,आभामंडल क्रिएट करें। सात बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर विज़ुअलाइज़ करें कि चारों ओर शक्तियों का घेरा बन गया है। उसके बीच में मैं हूँ और दूसरों को आत्मिक दृष्टि से देखें तो दूसरों की दृष्टि बुरी नहीं जायेगी। क्योंकि बहनों को इसको फेस करना पड़ता है। तो जितना अच्छा स्वमान होगा, पॉवरफुल बनके भी रहना है, कमज़ोरी भी न दिखाई दे। कई पवित्र आत्मा ऐसी हो जाती हैं थोड़ी डरने लगती हैं। थोड़ी कमज़ोर हो जाती हैं। तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे साथ स्वयं भगवान है ये स्मृति में रखेंगे तो जो सूक्ष्म डर होता है वो निकल जायेगा।

प्रश्न : हमारी उम्र के अनुसार अगर हमारा किसी मेल की तरफ अट्रैक्शन होता है तो उसपर कैसे काबू पाया जाये?

उत्तर : आत्मिक दृष्टि रखनी है, और अपनी प्युरिटी के बारे में स्वयं से चिंतन अवश्य करते रहना है। क्योंकि चिंतन का बड़ा महत्व है। सवेरे कर लो, कभी भी आप अकेले हों तो अपने से चिंतन करें, अब मेरा वो मार्ग नहीं है, अब मेरा ये मार्ग प्युरिटी का है। अब मैंने भगवान को अपना लिया है। मुझे कलियुग की राहों पर नहीं चलना है। मुझे तो सगंमयुग की इस पवित्रता की राह पर चलना है। अब भगवान को मैंने अपना साथी बना लिया है।

इस-इस तरह के जो सुन्दर विचार होंगे कि मैंने भगवान को वचन दे दिया है पवित्रता का, मेरी दृष्टि अब भगवान पर है, मनुष्यों की ओर तो जा ही नहीं सकती। बार-बार अपने को स्ट्रॉन्ग करेंगे तो दृष्टि हटती रहेगी और धीरे-धीरे खत्म हो जायेगी। कई बार जो चीज़ें हम देखते हैं या सुनते हैं या पढ़ते हैं क्योंकि आजकल मोबाइल सभी के पास है। तो वहाँ पर भी हमें संयम की ज़रूरत है। क्योंकि वहाँ से हमारे अन्दर गंदगी जा रही है। बहुत गंदगी होती है इन चीज़ों में हालांकि मैं देखता नहीं लेकिन मुझे कई कुमार आकर बताते हैं कि हमारा जीवन तो बिल्कुल खराब हो गया है। हमने छह मास ये गंदगी देख ली है अब वही स्वप्न आते हैं और वही विचार रहते हैं। सारा खेल बिगड़ गया है ज़िंदगी का। अब उसको हम कैसे भूलें? बहुत बड़ी कठिनाई हो जाती है। वही सीन उनके सामने आते हैं। गुगल आदि पर बहुत गंदगी डाल रखी है लोगों ने, तो इससे बचेंगे जो हमारा मार्ग ही नहीं है तो वो हम क्यों देखें? आप फिज़िक्स के स्टूडेंट हैं तो आप कॉमर्स थोड़े ही पढ़ेंगे! तो वो हमारा सब्जेक्ट ही नहीं है ये संकल्प अपने मन में दृढ़ कर दें। फिर उन चीज़ों की ओर हमारा ध्यान नहीं जायेगा। कई लोग सोचते हैं नॉलेज बढ़ जाये लेकिन नॉलेज नहीं गंदगी बढ़ेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?

जिस रास्ते जाना नहीं उसकी राह पूछने से क्या लाभ...!!!

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि योग की ओर मन खींचने लगे तो समझो हमने बहुत कुछ पा लिया है। फिर तो हम बाबा केपास जाकर बैठेंगे और बाबा से उसके सम्पूर्ण वायब्रेशन्स हमको मिलते रहेंगे। वायब्रेशन्स के रूप में उसके सर्व खज़ाने आत्मा में समाते हैं। चाहे सुख हो, शान्ति हो, पवित्रता हो, खुशी हो, उसका प्रेम हो, शक्तियां हो, उसकी दुआएं हो सब वायब्रेशन्स के रूप में ही आत्मा में समाती रहती हैं। बहुत अच्छा होगा यदि आप ये अभ्यास कर लें। अब आगे पढ़ेंगे...

पुराने भी हैं जो ढीले हो गए हैं। उनको भी ये अभ्यास कर लेना चाहिए। और पुराने में भी और तेज चलना चाहते हैं, समय की नाजुकता को जो समझते हैं उन्हें भी 4 बार 10-10 मिनट अवश्य बैठना चाहिए। कई भाई-बहनें ये कर रहे हैं, हमारे समर्पित भाई-बहनें भी करते हैं। जब भी टाइम मिलता है कहीं भी, बाबा के बहुत सारे रूम, मेडिटेशन रूम बने हुए हैं, कहीं भी बैठकर अच्छा योग करते हैं। योग करने में हमें 10 मिनट के लिए ये लक्ष्य ले लेना चाहिए। जैसे इस बार हम 10 मिनट पांच स्वरूपों का अभ्यास करेंगे, इस बार हम दस मिनट आत्मा के स्वरूप पर स्थित होंगे, आत्मा का चिन्तन करेंगे। इस बार 10 मिनट में हम परमधाम में बाबा के साथ जाकर बैठेंगे, फिर सूक्ष्म वतन में बापदादा के सामने जाकर दृष्टि लेंगे, बातें करेंगे। ऐसे एक लक्ष्य लेकर योग करने से हम उस ड्रिल में व्यस्त होंगे और बुद्धि भटकेगी नहीं।

ये सभी के लिए बहुत-बहुत आवश्यक है। आगे जाना है, आप अभी-अभी आये हैं। अच्छी तरह जानते हैं प्रभु मिलन के लिए पवित्रता पहली शर्त है। जो पवित्र नहीं वो भगवान को प्रिय भी नहीं और वो योगी भी

> *प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीज़ें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ!*

नहीं बन सकते हैं। क्योंकि इसके पीछे राज़ ये है कि योग में बुद्धि को स्थिर करने के लिए परमात्म स्वरूप पर, बुद्धि का बहुत डिवाइन और शक्शिाली होना आवश्यक है। और यदि कोई विषय विकारों में है तो उसकी शक्तियां नष्ट होती रहती हैं और उसकी बुद्धि स्ट्रॉन्ग नहीं हो पाती।

ब्रह्मचर्य का जो आधार इसको बनाया गया है उसका कारण यही है कि पवित्रता की शक्ति ब्रेन को डिविनाइज करे, दिव्य करे, शक्तिशाली करे ताकि वो स्थिर हो सके। कमज़ोर बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती। तो पहली धारणा पवित्रता। प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीज़ें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ! तो जिस मार्ग पर हमें चलना नहीं है उसकी चीज़ें क्यों हम देखें! हम इम्प्युर फिल्में, गन्दी चीज़ें जो आती हैं व्हाट्सएप्प पर, फेसबुक पर, यूट्यूब पर उन्हें हम क्यों देखें?

लक्ष्य बना लें, अपने को टीच करें(अपने को पढ़ायें) ये हमारा मार्ग नहीं है। ठीक है दुनिया में गन्दगी ही गन्दगी है, इसी को जीवन मान लिया है सबने। लेकिन हमारा ये मार्ग नहीं है। ऐसी स्वयं से बातें करते हुए प्युरिटी को स्ट्रॉन्ग करें। हमें उधर देखना ही नहीं है, उसके लिए सोचना ही नहीं है, जिस मार्ग पर हमें जाना नहीं है, भगवान को वचन दे दो- हम सम्पूर्ण पवित्र बनकर तुम्हारे महान कार्य को सफल करेंगे। और भगवान को एक बार वचन दे दिया तो उसे वापिस नहीं लेंगे।

कुछ भी करना पड़े, साथियों को समझा दो कि भगवान को वचन दे दिया हमने, हम सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं पर पवित्रता का पथ नहीं छोड़ेंगे। ये ईश्वरीय पथ है, ये प्रभु मिलन का मार्ग है। भगवान को खोजने का मार्ग नहीं, इसमें निरन्तर प्रभु मिलन का सुख हम प्राप्त कर सकते हैं, अतिन्द्रिय सुखों में रमण कर सकते हैं। ऐसा यदि आप करेंगे तो आप बहुत आगे चले जायेंगे।

मलाड वेस्ट-मुम्बई(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ और नागीनदास खांडवाला कॉलेज के सहयोग से वर्ल्ड बॉक्सिंग चैम्पियन एमसी मेरीकोम को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. मनीषा। साथ हैं हितेश चौधरी एवं ब्र.कु. संजय।

पन्ना-म.प्र.। स्वर्णिम प्रशासन कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् कलेक्टर सुरेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. रीना,भोपाल एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता।

कामठी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के न्यू सद्भावना भवन में विश्व महिला दिवस कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. शीलू बहन, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. रेखा व ब्र.कु. अरुणा। मौके पर उपस्थित रहे गट शिक्षणाधिकारी अल्का सोनवाणे, बैंक अधिकारी आम्रपाली मानवटकर तथा तहसील कार्यालय के अधिकारी नंदा सोनसरे।

राजनांदगांव-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ राजनांदगांव के ज्ञान मानसरोवर में आयोजित नवनिर्वाचित महापौर, अध्यक्ष एवं पार्षदों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. सुषमा, छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रदेश महामंत्री अजय भशीन, पार्षद न्यामत हुड्डा,नरेन्द्र लोहिया, महापौर मधुसूदन यादव,आसंदी, नगर निगम अध्यक्ष पारस वर्मा, हफिज खान,पार्षद न्यामत हुड्डा तथा अन्य।

अव्यक्त मुरली 24-02-2002 (पहेली-16)2024 -25

1				2	■	3			4
	■	■	■		■		■	■	
5			■		■	6		■	■
	■	■	7		■	■	■	8	
9			■	10	11		■		■
■	■	■	■	■		■	12		■
13		14	■	15			■	■	16
	■	17		■		■	18		
	■	■	■	19	■	■		■	■
■	20		■	21		■	22		■

ऊपर से नीचे

1. अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से ..... में वायब्रेशन फैलाओ।(5)
2. लक्ष्य सबका बहुत ऊंचे ते ऊंचा है लेकिन प्रत्यक्ष रूप में लक्षण ..... हैं।(5)
3. पाण्डव "लेकिन" शब्द अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। इसके लिए सबसे ..... विधि है, पहले हर एक अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रशेन है?(3)
4. सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी ..... से होता है, अगर आप फास्ट ..... चाहते हो तो नॉलेजफु ल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।(2)
8. अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटिव है तो वह विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पड़ता रहेगा, ... लग जायेगा।(3)
11. अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति ..... में नहीं आये। अचल, एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(4)
13. कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ ..... कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स क रा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो।(3)
14. महिला, स्त्री।(2)
16. अधिक, बहुत, ज्यादा, अत्यधिक। (2)
18. बाप को ..... करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ। (3)
19. घबराहट, डर। (2)

बायें से दायें

1. मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में ..... द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(5)
3. चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां, एक-एक का सहयोग, सफलता को प्राप्त करा रहा है। आप यह नहीं समझना हम तो सिर्फ देखने वाले हैं, नहीं। करने वाले हैं। सर्व के ..... से बेहद का कार्य चल रहा हैं।(4)
5. ..... की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें ..... की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(3)
6. आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट ..... तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं।(2)
7. जो ..... के स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें?(2)
9. लक्ष्य और ..... समान होना अर्थात् बाप समान बनना।(3)
10. बीती को बिन्दी लगाना और ..... के सिन्धु बन जाना।(3)
13. चारों ओर का वायुमण्डल अगर सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ ....., शुभ कामना वाला बन जायेगा तो प्रत्यक्षता में कोई देरी नहीं।(3)
15. अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति हलचल में नहीं आये। ....., एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(3)
17. रस्म, रिवाज़, प्रथा।(2)
18. नॉलेज है- यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड़ ऑफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब ..... को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं।(3)
20. अभी-अभी वृत्ति पॉवरफुल करो, वायब्रेशन पॉवरफुल बनाओ, वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, ... से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है।(2)
21. आपके ..... की स्थापना के बाद ही साइंस ने वृद्धि को प्राप्त किया है तो उसका फायदा कुछ तो लेंगे ना!(2)
22. ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा, कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बनें। ..... के सागर बनें।(2)

15/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 03-02-2002)

ऊपर से नीचे: 1. विज्ञानी, 2. यर्थाथ, 3. निश्चय, 4. काम, 5. सूर्यवंशी, 7. भविष्य, 8. खुश, 10. वायुमण्डल, 11. नया, 12. जमा, 14. साइडसीन, 16. कमल 17. प्रतिज्ञा।

बायें से दायें: 1. विजय, 3. निराकार, 6. कार्य, 9. अविनाशी, 10. वायब्रेशन, 13. हिंसा, 15. मस्तक, 17. प्रमाण, 18. मन, 19. ज्ञान, 20. लक्ष्य, 21. समान।

अंतिम विदाई में हुए शामिल सांसद व भाजपा जिलाध्यक्ष...

दादी का पार्थिव देह पंचतत्व में विलीन, हज़ारों आँखें नम

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। मानवता की सेवा में सर्वस्व न्यौछावर कर लाखों लोगों को सौहार्द, शान्ति, अध्यात्म और मूल्यों का पाठ पढ़ाकर श्रेष्ठ चरित्र निर्माण करने वाली ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय दादी रतनमोहिनी जी का पार्थिव देह गुरुवार सुबह 10 बजे पंचतत्व में विलीन हो गया। हज़ारों लोगों ने नम आँखों से दादी को अंतिम विदाई दी। युवाओं की दादी के नाम से प्रसिद्ध, आपने पूरे जीवन में लाखों युवाओं को नशामुक्त कर जीवन में नई राह दिखाई। मुख्यालय शान्तिवन के दादी निवास के सामने गार्डन में अंतिम संस्कार किया गया। दादी को संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. करूणा व डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, दादी की निजी सचिव ब्र.कु. लीला दीदी सहित वरिष्ठ अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने मुखाग्नि दी। हज़ारों लोगों ने ओम् ध्वनि की और ओमशान्ति मंत्र का उच्चारण कर व मौन रहकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंतिम यात्रा में पहुंचे जालौर-सिरोही के सांसद लुंबाराम चौधरी ने कहा कि दादी का जाना पूरे जिले के लिए अपूर्णीय क्षति है। गृहमंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भी शोक संदेश भेजकर संवेदना व्यक्त की। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, पूर्व विधायक जगसीराम कोली, विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख राजाराम, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हरीश चौधरी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश प्रमुख हीराराम बारड़, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, पूर्व जस्टिस वी. ईश्वरैया, सिविल जज शिवकांत कुशवाहा,ग्वालियर सहित शहर के भिन्न-भिन्न संस्थान के प्रतिनिधि, गणमान्य प्रबुद्धजन एवं देश-विदेश से आये पांच हज़ार से अधिक लोगों ने दादी को मुखाग्नि दी।

सांसद व भाजपा जिलाध्यक्ष मुखाग्नि देते हुए

भोजन बनाने से लेकर हर काम में बंटाया हाथ

1950 का वह दौर जब ब्रह्माकुमारीज़ का स्थानांतरण माउंट आबू हुआ था। उस वक्त दादी की आयु मात्र 26 साल थी। संस्थान में मात्र 350 लोग थे। तब सभी मिल-जुलकर भोजन बनाने की सेवा करते थे। ऐसे में दादी रतनमोहिनी ने भी साफ-सफाई से लेकर भोजन की सेवा में हाथ बंटाया। यहां तक कि दादी 80 साल की उम्र तक अपने सारे निजी कार्य स्वयं करती रहीं।

26 साल की उम्र में पहली बार माउंट आबू आईं

दादी रतनमोहिनी 26 साल की युवावस्था में सिंध से पहली बार ब्रह्मा बाबा के साथ मांउट आबू आईं थीं। विश्व सेवा और युवाओं को सद्मार्ग पर लाने की ऐसी धुन लगी कि आप सदा के लिए बाबा का हाथ पकड़ यहीं की होकर रह गईं। आपने अपना पूरा जीवन युवाओं के सशक्तिकरण, युवा जागृति और महिलाओं के सशक्तिरण में लगा दिया। युवाओं से विशेष प्रेम, स्नेह के चलते आपको सभी युवाओं की दादी कहकर पुकारते थे।

34 साल की उम्र में जापान में दिया संबोधन

दादी जब मात्र 34 साल की थीं तो जापान में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन में दादी प्रकाशमणि के साथ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया था। जब आपने सम्मेलन में अपना उद्बोधन देना शुरू किया और भारतीय संस्कृति की महिमा बताई तो चारों ओर सन्नाटा छा गया। इतनी कम उम्र में आध्यात्मिक गहराई की बातें सुनकर वहाँ मौजूद विद्वान अचंभित रह गए। इस दौरान एक साल तक एशिया के देशों में अध्यात्म और योग का परचम लहराया।

एकांत, अध्ययन और अध्यात्म में रही रुचि

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने दादी के साथ का अनुभव बताते हुए कहा कि दादी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार थे। वह छोटी उम्र में ही खेलने-कूदने की जगह ध्यान व अध्ययन में अपना वक्त बिताती थीं। बचपन से ही पढ़ाई में होशियार के साथ-साथ उनका स्वभाव धीर-गंभीर रहा। क्लास में समय पर जाना और होमवर्क समय से करने के कारण वह अपने सभी शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थियों में अन्त तक शामिल रहीं।

राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री सहित प्रमुख महानुभावों ने भी जताया शोक

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के निधन पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, केंद्रीय मंत्री से लेकर कई राज्यपाल और मुख्यमंत्रियों ने शोक जताया व संवेदना व्यक्त की।

- महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने शोक संदेश में लिखा कि दादी रतनमोहिनी जी के निधन के बारे में जानकर बहुत दुःख हुआ। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का एक प्रकाश स्तंभ थीं। इस संस्थान ने मेरी जीवन यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दादी रतनमोहिनी जी ने अपनी शिक्षाओं और कार्यों से अनगिनत लोगों की सोच और जीवन को संवारा है। उन्होंने आजीवन सेवा, सद्भाव, शान्ति और परोपकार के संदेश का प्रसार किया। मैं पूरे विश्व में विद्यमान ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सभी सदस्यों एवं इस संस्था के शुभचिंतकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करती हूँ।
- दादी के निधन पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि आप आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर थी। आप सदैव प्रकाश, ज्ञान और करुणा के रूप में याद की जाएंगी। आपकी जीवन यात्रा सादगी और सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता में निहित रही। आपकी विनम्रता, धैर्यता, विचारों की स्पष्टता और दयालुता सदा याद रही। दुःख की इस घड़ी में मैं ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के साथ हूँ।
- मुंबई के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस ने शोक जताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की आदरणीया राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी के देहावसान की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया था। अपने 101 साल तक अनुशाषित और साधनापूर्ण जीवन कई युवाओं के लिए प्रेरणादायी रहा। मैं उन्हें भावनापूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।
- राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लिखा कि लाखों लोगों में आध्यात्मिक प्रकाश को जगाने वाली दादी रतनमोहिनी जी के सेवा कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता है।
- मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शोक संदेश में लिखा कि ब्रह्माकुमारीज़ के लिए यह दुःख का क्षण है। मैं सभी सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।
- गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने शोक संदेश भेजा है कि दादी जी ने अंतिम दिनों तक पूर्ण जीवन जिया। मात्र दो दिन की अस्वस्थता के बाद नश्वर देह त्याग दिया। आपने सात दशक तक समर्पित भाव से नारी जागृति, मानवीय मूल्यों, शान्ति और आध्यात्मिक जागृति के लिए जो सेवाएं की हैं, वह समाज और विश्व के लिए एक अनमोल धरोहर है।
- गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने लिखा है कि दादी ने बचपन में ही ब्रह्मा बाबा के सानिध्य में अपना जीवन आध्यात्मिक सेवाओं के लिए समर्पित कर दिया। आप शतायु तक सेवाएं करते रहे। ऐसी पुण्य आत्मा के प्रति मेरी भावभीनी श्रद्धाजंलि।
- बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लिखा कि दादी ने अपना पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। उनके निधन से आध्यात्मिक जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। दुःख की इस घड़ी में मैं उनके अनुयायियों के साथ हूँ।

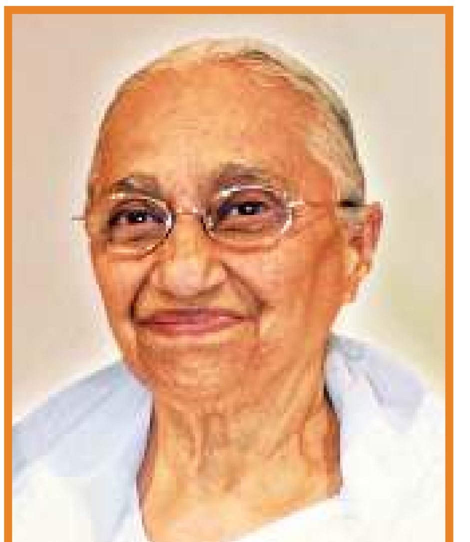

- तेलंगाना के माननीय मुख्यमंत्री अनुमुला रेवंत रेड्डी ने लिखा है कि 140 देशों में फैले ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी के निधन के समाचार से दुःखी हूँ। आपने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण में लगा दिया।
- केंद्रीय कृषि मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान ने लिखा कि दादी जी का संपूर्ण जीवन योग, तपस्या और सेवा का प्रतीक रहा। उन्होंने लाखों लोगों को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनका स्नेह, विनम्रता और दिव्यता सदैव स्मरणीय रहेगी। उनका निधन संपूर्ण मानव समाज व आध्यात्मिक जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है।
- तेलंगाना के माननीय राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने कहा कि दादी ने अपना पूरा जीवन मूल्यों और आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार में लगा दिया।
- गुजरात भाजपा के प्रवक्ता हिरेन कोटक ने कहा कि दादी ने ब्रह्माकुमारीज़ के वैश्विक आंदोलन को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान किया।
- साथ ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, छ.ग. के राज्यपाल रमन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सहित सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ विधान सभा, मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, तेलगू अभिनेता सुमन गुरु, प्रसिद्ध एक्टर अनुपम खेर सहित भारत के गणमान्य व्यक्तियों ने भी अपने शोक संदेश भेज दादी जी की विशेषताओं को याद कर शोक जताया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th April, 2025
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org